वर्ष 23 । अंक 12 । जुलाई, 2022

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

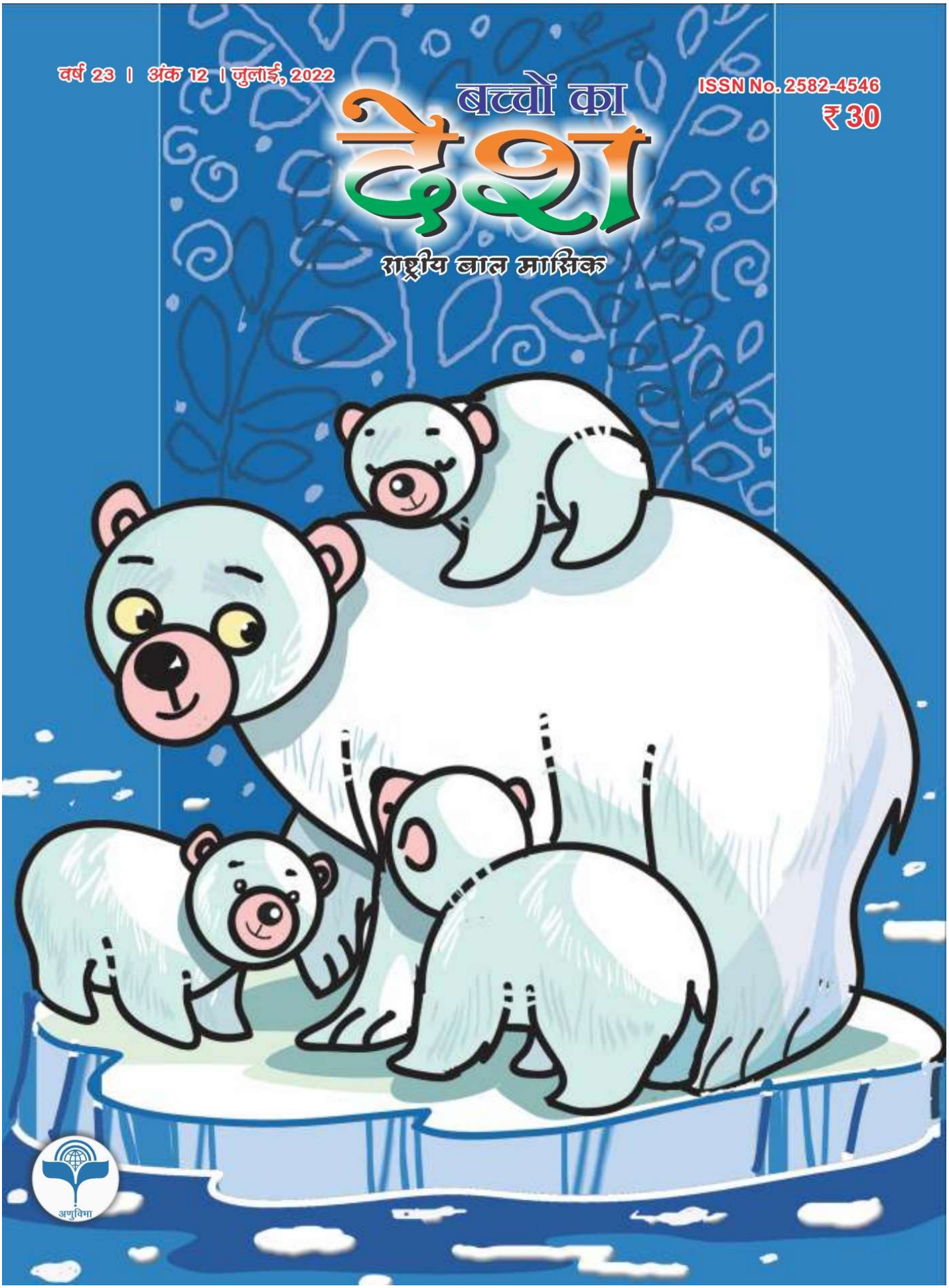

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?

- उल्लू अपने पीछे की वस्तु को देख सकता है क्योंकि उल्लू की गर्दन 270 डिग्री तक घूमती है।
- उल्लू रात का पक्षी है क्योंकि रात में इसे दिखाई देता है, दिन में नहीं। उल्लू रात को जागता है और दिन में सोता है।
- उल्लू की आँखें बड़ी होती हैं, कुल वजन का 5 प्रतिशत भाग। इसके कारण सूर्य की रोशनी से उसकी आँखें चौंधिया जाती हैं।
- उल्लू इनसानों की तुलना में 10 गुना धीमी आवाज को भी सुन सकता है।
- पृथ्वी पर कई करोड़ साल पुराना उल्लू का जीवाश्म पाया गया है।
- उल्लू के पँख मुलायम होते हैं इसलिए उल्लू उड़ते समय आवाज नहीं करते हैं।
- उल्लू किसी भी तरफ सुनने के लिए अपने कानों को घुमा सकते हैं जिससे उसी दिशा की बातें सुनाई देंगी।
- उल्लू अधिक से अधिक 30–32 साल तक जीवित रह सकते हैं।
- उल्लू अन्य पक्षियों की अपेक्षा बेहद शान्त पक्षी है, वह अकेला रहना पसन्द करता है।
- उल्लू आसानी से 100 फीट तक देख सकता है।
- दुनिया के सबसे छोटे उल्लू का वजन लगभग 30–40 ग्राम होता है।

कहाँ क्या?

अंक विशेष

डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी	: ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'	– 11
होनहार बच्चे	: शिखर चन्द जैन	– 14
अन्तरराष्ट्रीय शतरंज दिवस	: अनिल जायसवाल	– 26
कहानी माचिस की	: दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'	– 28
पर्वतों की रानी : नेतरहाट	: अंकुश्री	– 38
चार्ल्स ब्लॉन्डिन	: इंजी. के.एस. सामोता	– 39
कैसे होता है राष्ट्रपति का चुनाव	: डॉ. बसन्तीलाल बाबेल	– 40

कहानी

निगल गया पानी	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
पहली बारिश	: डॉ. निधि माहेश्वरी	– 09
चिंकी की चॉकलेट	: हरिन्दर सिंह गोगना	– 15
सही फैसला	: कुसुम अग्रवाल	– 19
बावड़ी का दर्द	: पद्मा चौगांवकर	– 22
फैंसी ड्रेस	: मीनू त्रिपाठी	– 23
माँ की सीख	: ओम प्रकाश तँवर	– 31
राजू का सरप्राइज	: देवेन्द्रराज सुथार	– 34
सदा बढ़ता है यह पौधा	: रेनू सैनी	– 35

कविता-गीत

तरकारी का खेल	: सुशीला शर्मा	– 06
ये बादल क्यों रोते हैं	: रेखा लोढ़ा स्मित	– 10
बादल आए	: नीता अवस्थी	– 10
बरखा दीदी	: महेन्द्र कुमार वर्मा	– 10
परमवीर मेजर धनसिंह थापा	: डॉ. वेद मित्र शुक्ल	– 13
उठ प्यारे	: श्याम पलट पांडेय	– 18
नई किताबें	: राजकुमार निजात	– 18
बच्चों से	: श्याम मठपाल	– 30

विविधा

बूझो तो जानें : माणक तुलसीराम गौड़ – 16
वर्ग पहेली : राधा पालीवाल – 17
दिमागी कसरत : प्रकाश तातेड़ – 21
गिनकर बताएँ : धर्म पाल मिन्टू – 25
परछाई को पहचानिए : चाँद मोहम्मद घोसी – 36
शिक्षाप्रद दोहे : कैलाश त्रिपाठी – 37

स्तम्भ

क्या आप जानते हो ? – 2, सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 25, दस सवाल : दस जवाब– 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये – 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी – 33, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला – 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार – 44, Bachchon Ka Club – 46, चित्र कथा–47, किड्स कॉर्नर– 50,

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष - 23 अंक -12 जुलाई, 2022

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452
सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651
प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन | वेणु वरियाथ

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति : 30 रु.
वार्षिक : 300 रु.
त्रैवार्षिक : 800 रु.
पंचवार्षिक : 1200 रु.
दस वर्ष : 2400 रु.
पंद्रह वर्ष : 7000 रु.
(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित
ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

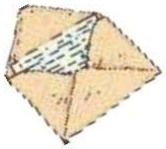

प्यारे बच्चो,

विवेक इस वर्ष आठवीं कक्षा में आ गया है। स्कूल में उसकी गिनती होशियार बच्चों में होती है। स्कूल में उसके बहुत से दोस्त हैं। उनमें एक है आदिल। आदिल और विवेक की जोड़ी पूरे स्कूल में प्रसिद्ध है। दोनों की दोस्ती की मिसाल दी जाती है।

इन छुट्टियों में आदिल अपनी अम्मी के साथ ननिहाल चला गया था। इसीलिए उसके साथ ज्यादा रहना-खेलना न हो सका। स्कूल खुले अभी 8-10 दिन हुए थे। आदिल का व्यवहार कुछ बदला-बदला सा लग रहा था। जब भी उसने बात करनी चाही आदिल ने टाल दिया। आज स्कूल से छुट्टी के बाद विवेक ने आदिल को रोक लिया और बोला- ''आदिल, हमारी दोस्ती को किसकी नजर लग गई ? आखिर क्यों तुम आजकल अलग-अलग से रहते हो ? बताना ही पड़ेगा आज तुम्हें।''

आदिल के चेहरे पर उदासी छा गई। बोला- ''क्या करूँ विक्की! और क्या बताऊँ तुम्हें ? हम दोनों अलग-अलग धर्म को मानते हैं। आजकल जो बातें मैं सुनता हूँ तो डर लगता है। मुझे समझ ही नहीं आता कि हम दोनों दोस्त हो सकते हैं या नहीं ?''

विवेक कुछ सोच लें, इस सवाल का जवाब खोजते अपने घर पहुँच गया। रात को खाने के बाद पापा टीवी पर न्यूज़ देख रहे थे। उसने पापा से बात करना चाही लेकिन वे टीवी पर चल रही बहस में इस कदर डूबे थे कि विवेक को झिड़क कर चुप कर दिया। विवेक देख रहा था टीवी पर अलग-अलग धर्म के लोग एक दूसरे पर चिल्ला रहे थे। वह वहीं बैठा इन्तजार करता रहा। टीवी शो खतम हुआ तो वह तपाक से पूछ बैठा- ''पापा, क्या दो अलग धर्म के लोग दोस्त नहीं हो सकते ?'' अचानक से आए इस प्रश्न पर पापा हड़बड़ा गए, बोले- ''न. नहीं... नहीं... क्यों नहीं... ? ''लेकिन पापा, टीवी पर तो कुछ और ही दिखाया जा रहा है। आज आदिल भी ऐसा ही कुछ कह रहा था।''

''नहीं बेटा, सभी धर्म अच्छे ही होते हैं, अच्छा इनसान बनने की बात ही कहते हैं।'' कह तो दिया लेकिन वे मन ही मन सोच रहे थे कि धार्मिक नफरत की आग ने इन मासूम बच्चों को भी घेर लिया है। उन्हें अपने मन में भी पैदा हो रही नफरत का अहसास हुआ। उन्होंने उसी वक्त संकल्प लिया कि धार्मिक कट्टरता दिखाने वाले कार्यक्रम वे नहीं देखेंगे। विवेक से बोले- ''बेटा, तुमने मेरी भी आँखें खोल दी। अगले रविवार को आदिल को अपने घर बुलाना खाने के लिए और हाँ उसके अम्मी-अब्बा को भी। तुम दोनों की दोस्ती पर कोई आँच नहीं आने दूँगा।''

विवेक पापा से लिपट गया। उसकी आँखों में खुशी के आँसू थे।

प्यारे बच्चो, हम अपने धर्म को मानें और दूसरों के धर्म का आदर करें तभी हम एक अच्छे इनसान कहला सकेंगे। हम सब सर्वधर्म सद्भाव के रास्ते पर चलें, इसी शुभकामना के साथ,

आपका ही,

संचय

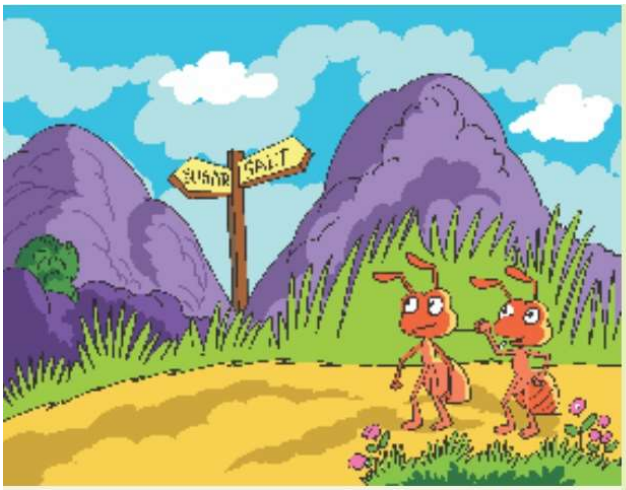

महाप्रज्ञ की कथाएँ

पूर्वाग्रह से मुक्ति

एक चींटी कहीं जा रही थी। बीच रास्ते में दूसरी चींटी मिल गयी। दोनों में बातचीत होने लगी। अतिथि चींटी ने सुख–संवाद पूछा तो वहाँ खड़ी चींटी ने कहा– ''बहन! और तो सब ठीक है पर मुँह का स्वाद खारा बना रहता है।''

अतिथि चींटी ने कहा– ''तुम नमक के पर्वत पर रहती हो, फिर मुँह खारा क्यों नहीं होगा? चलो मेरे पास। मैं मिश्री के पहाड़ पर रहती हूँ। वहाँ तुम्हारा मुँह मीठा हो जाएगा।'' चींटी उसी समय अतिथि चींटी के साथ चल पड़ी। लेकिन वहाँ पहुँचने पर भी उसका मुँह मीठा नहीं हुआ।

''मुँह में नमक की डली तो नहीं लायी हो?'' मिश्री के पहाड़ पर रहने वाली चींटी ने पूछा। ''वह तो है।'' नमक के पहाड़ पर रहने वाली चींटी ने कहा। अतिथि चिंटी ने जवाब दिया– ''बहन, नमक को छोड़े बिना मुँह मीठा कैसे होगा?''

कथाबोध– मन में पहले से बने सोच से मुक्ति पाए बिना कोई भी आदमी सत्य को नहीं पा सकता।

पद्य कथा

तरकारी का खेल

आओ बच्चो! मिलकर देखें
तरकारी का खेल,
लौकी, ककड़ी और करेला
नहीं है इनमें मेल।
लौकी कहती मैं हूँ रानी
सभी मुझे हैं खाते,
बीमारी में डाक्टर भी तो
मेरा नाम सुझाते।

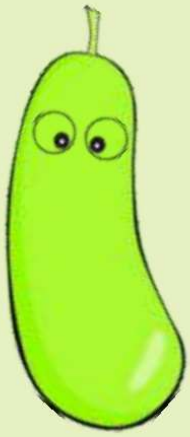

ककड़ी बोली, मैं सलाद में
सबके मन को भाती,
भोजन की थाली में सजकर
सबका स्वाद बढ़ाती।
इतने में ही धनिया बोला
मुझ बिन सब है सूना,
हर व्यंजन में डल जाऊँ तो
महक उठे वह दूना।

गुस्से में थाली से बाहर
आया एक करेला,
मियां मिट्ठू बनते हो तुम
छोड़ा मुझे अकेला ?
मैं कड़वा हूँ तो क्या होता
मुझ में गुण हैं हजार
औषधि में मैं आता हूँ
खाओ तो इक बार।

बच्चों ने तब मैडम जी से
पूछे कई सवाल,
सब्जी तो भाती ना हमको
मचा रहे थे बवाल।
मैडम जी ने शान्त कराया
हर सब्जी का गुण बतलाया,
बीमारी से बचना है तो
सब्जी खाओ ये समझाया।

सुशीला शर्मा
जयपुर (राजस्थान)

साहसी बच्चे

निगल लिया पानी

छत्तीसगढ़ के विलासपुर में छोटी कोनी नामक स्थान की रहने वाली रजनी सोनवानी, पुष्पा, काजल, और पूनम चारों आपस में सहेलियाँ थी। उनके घर आस पास थे। वे हमउम्र थी। नौ अगस्त 2009 के दिन चारों ने अरपा नदी में घर वालों से पूछकर स्नान करने पहुँच गईं। अरपा नदी को छत्तीसगढ़ की जीवनदायिनी नदी माना जाता है।

तय कार्यक्रम के अनुसार सुबह सात बजे ही ये चारों सहेलियाँ नदी के दुर्जन घाट पहुँच गईं। वे हँसती खिलखिलाती अरपा के पानी में नहाने के लिए उतरने लगीं। उस समय नदी में खूब पानी था। जिन दिनों नदी में कम पानी रहता उन दिनों किनारे के बिना पानी वाले स्थान से रेत की खुदाई की जाती थी। जिसके कारण नदी के तल में जगह–जगह बड़े–बड़े गड्ढ़े हो गए थे। जिनमें बाद में पानी भर चुका था और अब वे बाहर से नहीं दिखाई दे रहे थे।

ये चारों सहेलियाँ इस बात से अनजान थी। उनमें रजनी और पुष्पा को तैरना नहीं आता था। मगर नहाते समय वे दोनों बातों–बातों में अनजाने में ही आगे बढ़ती हुईं जाने लगी। तभी यकायक उनके पैर उसी गहराई वाले गड्ढ़े में चले गये। अचानक वे डूबने लगी। कोई सहारा न पाकर वे अपने बचाव के लिए चिल्लाने लगी।

उन्हीं के साथ–साथ पीछे से काजल और पूनम भी उस ओर बढ़ती जा रही थी। वे दोनों उनको बचाने के लिए आगे बढ़ीं तो खुद भी उसी हादसे का शिकार हो गईं। पानी की गहराई के बारे में उन्हें कुछ अन्दाजा नहीं था इसलिए, वे घबरा गईं और बचाव के लिए चिल्लाने लगी। उधर घाट पर बाकी लोग दूर थे। मगर साढ़े दस साल का राहुल कुर्रे वहीं पर नदी में नहा रहा था। वह उस समय पानी के अन्दर ही था।

लड़कियों की इस चीख पुकार को सुनकर उसका ध्यान इनकी ओर गया। वह तुरन्त तैरता हुआ उन लड़कियों की ओर बढ़ा। नदी के पानी के बहाव काटते हुए वह जल्दी ही उनके निकट जा पहुँचा। उसने उनमें से एक काजल को सावधानीपूर्वक पकड़ा

देखें पृष्ठ 13...

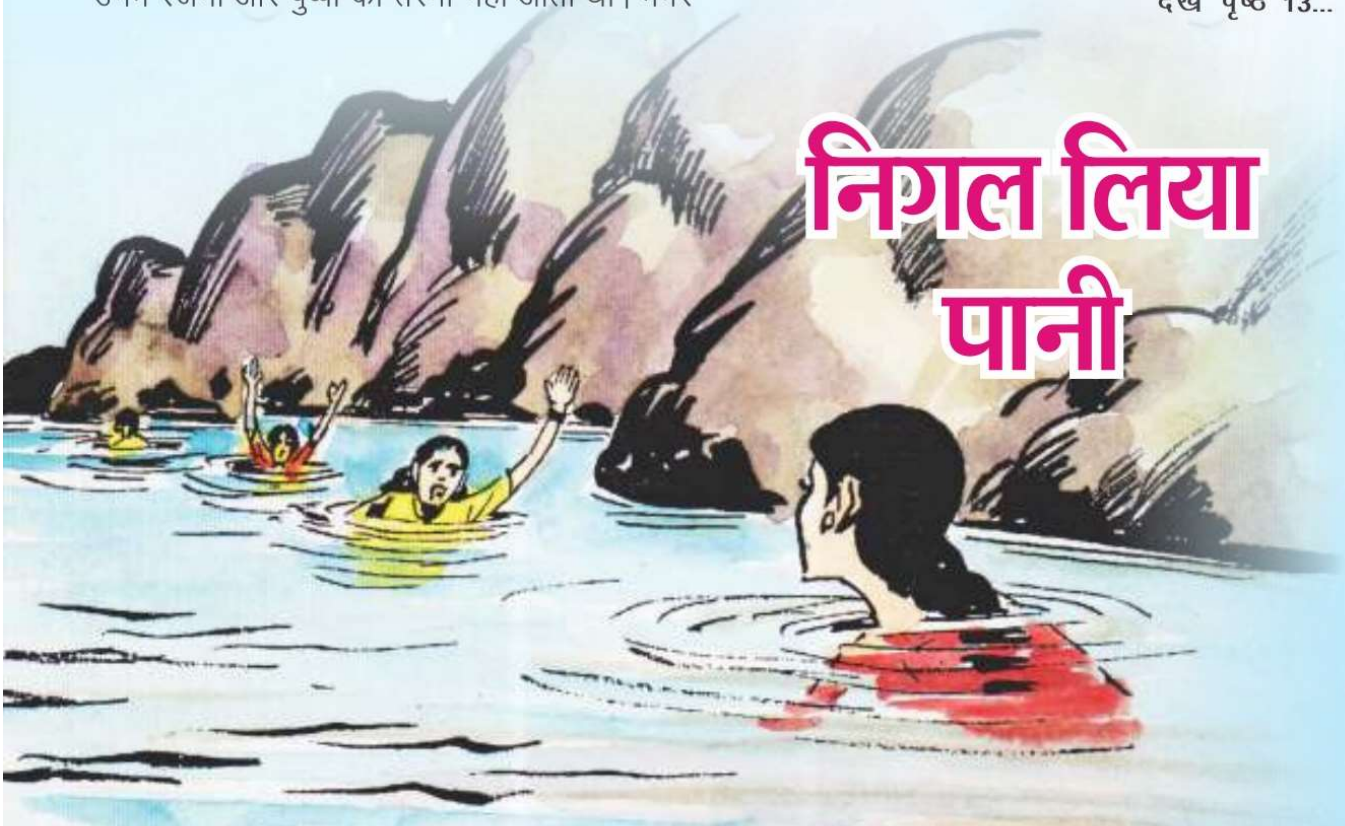

जीवन विज्ञान के प्रयोग

मुद्रा और भाव

शरीर की भावपूर्ण आकृति को मुद्रा कहते हैं। मुद्रा से व्यक्ति के मन के भावों का पता लगता है। आइए, अब हम कुछ भाव–मुद्राओं के बारे में जानें–

चिन्ता-मुद्रा

गहरी चिन्ता में डूबा मनुष्य अपने आस–पास की गतिविधियों से बेखबर रहता है। चिन्तित मनुष्य अथवा चिन्ता से घिरा मनुष्य–माथे पर हाथ रखकर, पैर के अँगूठे से जमीन कुरेदकर अथवा हाथ की अँगुलियों को ठकठकाकर, औंधे मुँह (पेट के बल) लेटकर आदि मुद्राएँ बनाता है।

चंचल-मुद्रा

चंचल भाव वाले व्यक्ति का मन–मस्तिष्क एकाग्र नहीं हो पाता। उसका ध्यान एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता। उसकी भाव–भंगिमा क्षण–क्षण बदलती रहती है। वह इधर–उधर देखता रहता है।

द्वेष-मुद्रा

किसी दूसरे के प्रति मन में विरोध अथवा बैर की भावना द्वेष भाव कहलाती है। विरोधी अथवा बैरी का बुरा सोचने के कारण व्यक्ति परेशान रहता है। ऐसे में दाँतों को किटकिटाना या नाखून कतरना, हाथों को रगड़ना, तिरछी नजरों से देखना आदि मुद्राएँ द्वेष के भाव को व्यक्त करती हैं।

व्यंग्य-मुद्रा

किसी को ताना देना, परेशान करना अथवा मजाक बनाने की प्रवृत्ति व्यंग्य भाव कहलाती है। यदि किसी व्यक्ति के मन में व्यंग्य का भाव हो तब उसकी मुख–मुद्रा विचित्र प्रकार से टेढ़ी हो जाती है। वह दूसरों को चिढ़ाने का प्रयास करता है। उसके होंठों पर एक दबी हुई कुटिल मुसकान आ जाती है।

प्रसन्न-मुद्रा

जब व्यक्ति के मन में प्रसन्नता अथवा खुशी का भाव होता है तब उसका मुख कमल के समान खिल जाता है। उसकी वाणी और शारीरिक मुद्राओं में जोश और उत्साह दिखाई देता है। उसकी आँखों की चमक बढ़ जाती है। ये प्रसन्न भाव की मुद्राएँ हैं।

इन इमोजी की भाव मुद्रा क्या है ?

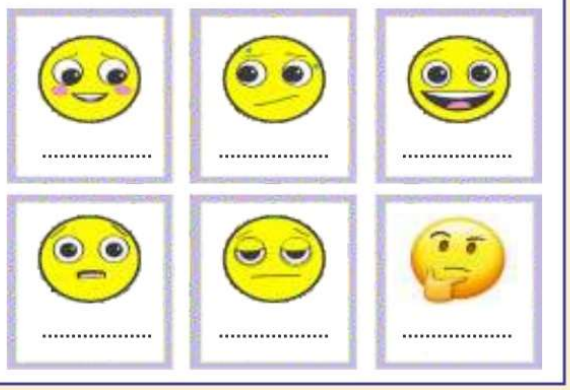

पहली बारिश

मानसून शुरू हो चुका था, आज सुबह से ही बादल घिरे हुए थे। बार–बार बिजली कड़क रही थी। दोनों बहनें टिया और रिया बोली कि– ''मम्मी बारिश शुरू होने वाली है और बहुत तेज बारिश आएगी, आज तो हम दोनों बारिश में खूब नहाएँगे।'' पापा ने ये बात सुनी तो तुरन्त बोले– "नहीं टिया, रिया तुम आज की बारिश में नहीं नहाओगी।''

दोनों ने पूरी बात सुने बिना ही कहा– "क्या पापा, आप हमेशा ही ऐसा कहते रहते हो। लगता है आज बहुत तेज बारिश आएगी और तेज बारिश में ही नहाने का मजा है।'' पापा बोले– "बेटा, मैं बारिश में नहाने से मना नहीं कर रहा, मैं बस यह कह रहा हूँ कि आज मौसम की पहली बारिश है, आज मत नहाओ, अब तो मानसून शुरू हो ही चुका है, फिर जब बारिश आएगी जरूर नहाना।'' ''बारिश तो बारिश है पापा पहली और दूसरी क्या?'' रिया ने तुरन्त पूछा। पापा– "बेटा मौसम की पहली बारिश बड़े शहरों में अम्लीय होती है क्योंकि यहाँ वायु में प्रदूषण की मात्रा बहुत अधिक होती है।"

"अम्लीय बारिश वो भी प्रदूषण की वजह से, वो कैसे पापा?" टिया ने उत्सुकता से पूछा। पापा– "सुनो बड़े शहरों में जहाँ वायु प्रदूषण ज्यादा हो, वहाँ पर वाहनों से निकलने वाले धुएँ में सल्फर डाई आक्साइड गैस वायुमंडल में जल वाष्प से क्रिया करके गंधक का तेजाब यानी सल्फ्यूरिक अम्ल बनाती है और फैक्ट्रियों इत्यादि के धुएँ से निकले नाइट्रोजन के ऑक्साइड, नाइट्रिक अम्ल बनाते हैं। ये दोनों अम्ल बहुत हानिकारक होते हैं, हमारे शरीर के साथ–साथ पेड़–पौधों, मिट्टी, इमारतों इत्यादि के लिए भी।" टिया– "पापा, नुकसान कैसे है इससे?"

पापा– "बेटा, जैसे ताजमहल का पत्थर अम्लीय वर्षा के कारण ही पीला पड़ गया और अब उस इमारत की मरम्मत हो रही है। इसी तरह मिट्टी अगर ज्यादा अम्लीय हो जाए तो खेती को नुकसान होता है और हमारे शरीर में भी त्वचा सम्बन्धी परेशानी जैसे एलर्जी, खुजली, दाने आदि हो सकते हैं। इसीलिए मैं कह रहा हूँ कि अगली बरसात में नहा लेना।''

दोनों बहनें उदास होकर बैठ गई और बोली ''ठीक है अगली बारिश का इन्तजार करते हैं।'' मम्मी ने भी ये बातें बड़े ध्यान से सुनी और बोली– "तुम दोनों उदास क्यों होती हो, चलो गरमागरम पकोड़े बनाती हूँ। "अरे वाह! बारिश और गरमागरम पकोड़े मजा आ जाएगा।" सुनकर पापा बोले।

दो दिन बाद फिर से आकाश में घने बादल छाए। आज मौसम देखते ही दोनों के चेहरे खिल गए। रिया ने तो तुरन्त नाव बनानी शुरू की और टिया बोली– ''आज तो खूब नहाना है।'' पापा ने कहा– "हाँ, आज दोनों खूब नहा लेना... पर बरसात तो शुरू होने दो।" हँसते हुए बोले। जैसे ही बरसात शुरू हुई, दोनों बहनें तुरन्त अपने घर के बाहर सोसायटी में दौड़ते हुए आ गई और नहाना शुरू किया। रिया अपनी नाव पानी में छोड़कर बोली– "दीदी चलो, नाव का पीछा करते हैं, देखते हैं कहाँ तक जाती है?"

सोसायटी में खूब बड़े–बड़े पेड़ पौधे लगे हुए थे, कभी पेड़ों से गिरती बारिश का मजा लेती कभी पानी में छप–छप करती। तेज हवा से कोई केले का बड़ा सा पत्ता आकर गिरा। दोनों बहनों ने अपनी मस्ती में जल्दी से पत्ते को उठाकर उसका छाता बनाया और खूब पानी में मस्ती की। दोनों ने गर्मी की बारिश का खूब मजा लिया।

डॉ. निधि माहेश्वरी
हापुड़ (उत्तर प्रदेश)

बादल आए

काले–काले बादल आए,
उमड़–घुमड़ कर जल बरसाए।

धरती पर छाई हरियाली,
झूम रहीं पेड़ों की डाली।
मेढक भी आवाज लगाए,
काले–काले बादल आए।

भीग रहे बारिश में बच्चे,
कितने खुश हैं मन के सच्चे।
कागज की हैं नाव बनाए,
काले–काले बादल आए।

शीतल हवा चली सुखदाई,
सूरज ने भी ली अँगड़ाई।
इन्द्रधनुष नभ में मुसकाए,
काले–काले बादल आए।

नीता अवस्थी
उन्नाव (उत्तर प्रदेश)

ये बादल क्यों रोते हैं

हर बार जुलाई आते ही
ये बादल क्यों रोते हैं?
कुछ चिल्लाते बड़े जोर से
कुछ सहमे से होते हैं।

लगता मुझे जुलाई में ही
विद्यालय खुल जाता है,
बाद छुट्टियों के जाने में
इनको रोना आता है।
याद नहीं लेसन कर पाए
उड़े इसलिए तोते हैं,
हर बार जुलाई आते ही
ये बादल क्यों रोते हैं?

चीजें रखकर भूल गए हों
ऐसे दौड़ लगाते हैं,
इस कमरे से उस कमरे में
जैसे आते–जाते हैं।
पेन–पेंसिल बस्ता पुस्तक
क्या इनके भी खोते हैं?
हर बार जुलाई आते ही
ये बादल क्यों रोते हैं?

बिजली दीदी कड़क–कड़क कर
लगता इन्हें डराती है,
जबरन हवा पकड़ कर इनको
विद्यालय ले जाती है।
लेकिन नटखट बादल सारे
बैठ क्लास में सोते हैं,
हर बार जुलाई आते ही
ये बादल क्यों रोते हैं?

रेखा लोढ़ा 'स्मित'
भीलवाड़ा (राजस्थान)

बरखा दीदी

बरखा दीदी आती हैं,
सबका मन हरषाती हैं।

झिमझिम की झड़ियाँ प्यारी,
टिप टिप गीत सुनाती' हैं।

कोयलिया जो बाँच रही,
वह सावन की पाती है।

चली हवा जब शीतल सी,
सबका मन बहलाती है।

मेढक भी टर्राता है,
रात कली मुसकाती है।

खुशी बहारें मेलों की,
मस्ती बरखा लाती है।

महेंद्र कुमार वर्मा
भोपाल (मध्य प्रदेश)

बालक बना महान

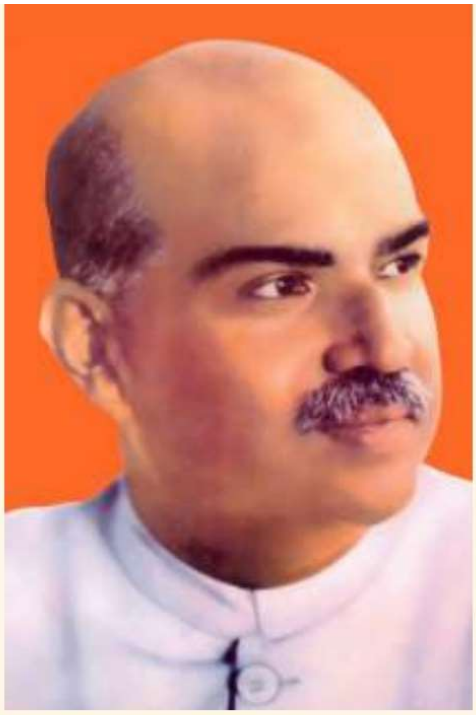

मानवता के उपासक, राजनेता
डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी

डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी को भारतीय शिक्षा जगत में सबसे कम उम्र में कुलपति बनने का गौरव प्राप्त है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि आपकी शिक्षा के प्रति रुचि व प्रतिभा को प्रदर्शित करती है।

पारिवारिक परिचय

आपका जन्म 6 जुलाई 1901 को आशुतोष मुखर्जी के घर कोलकाता में हुआ था। आपके पिता प्रसिद्ध शिक्षाविद, विचारक, चिन्तक तथा विद्वान वक्ता थे। जिनका विभिन्न विद्वानों के साथ विचार–विमर्श होता रहता था। परिवार के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक वातावरण का आप पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा था। यही कारण है कि आपने वर्ष 1917 में मैट्रिक, 1921 में स्नातक और 1923 में वकालत की उपाधि प्राप्त कर ली। इतनी कम उम्र में आपने हरेक परीक्षा प्रथम श्रेणी व अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की थी। यह आपकी मेधावी क्षमता का परिचायक है।

आपकी रुचि आरम्भ से ही गणित विषय में थी। आप इसका अध्ययन करने विदेश चले गए। वहाँ आपकी प्रतिभा से प्रभावित होकर लंदन की मैथमेटिक्स सोसाइटी ने आपको मानद सदस्यता देकर सम्मानित किया। यह सम्मान एक भारतीय के लिए गौरव की बात है। वहाँ से 1926 में आप भारत लौट आए।

इसी दौरान आपका विवाह सुधा देवी से हो गया। मगर आपका वैवाहिक जीवन ज्यादा लम्बा नहीं चला। आपकी पत्नी का निधन हो गया। इस परिस्थिति से विचलित हुए बिना, आपने आजीवन विवाह न करते हुए भारतीय जनता की दशा सुधारने के लिए कार्य करने का लक्ष्य बना लिया। उसी लक्ष्य के लिए प्राणपन से कार्य करने लगे।

कुलपति पदारोहण

इस दौरान आपके पिता का निधन हो गया। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति थे। आपको 33 वर्ष की अल्पायु में विश्वविद्यालय का कुलपति बना दिया गया। इस दौरान आपने विभिन्न सम्मेलनों में भाग लिया। इस कार्य से आपकी विद्वत्ता की ख्याति के साथ–साथ के शिक्षाविद, विज्ञान वेता, मानवता के उपासक, सांस्कृतिक एकता के प्रबल समर्थक के रूप में आपकी पहचान पूरे भारतवर्ष में फैलने लगी।

इस समय भारतीय जनता की स्थिति बहुत ही दयनीय थी जिसके कारण आप बहुत ही चिन्तित थे। इसलिए उनकी दुर्दशा सुधारने के लिए आपने 1939 में सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया ताकि वे मानवतावादी कार्य करके जनता का उद्धार कर सके।

राजनीति में प्रवेश

इसी महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए, राजनीति को अपना कार्यक्षेत्र बनाने वाले मुखर्जी ने गांधीजी की अहिंसावादी और मानवता विरोधी दृष्टिकोण का भरपूर विरोध किया।

स्पष्टवादी वक्ता होने और अपने विचारों पर सदैव दृढ़ रहने के कारण 1947 में स्वतन्त्र भारत की सरकार में आपको वित्त मंत्री बनाया गया। आप 15 अगस्त 1947 से 6 अप्रैल 1950 तक वाणिज्य और

उद्योग मंत्री पद पर कार्य करते रहें। इस दौरान आपने चितरंजन में रेल इंजन बनाने का कारखाना, विशाखापट्टनम में जहाज बनाने का संयंत्र एवं बिहार में खाद उद्योग की स्थापना में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ताकि भारत को आत्मनिर्भर बनाया जा सके एवं जनता की विषम स्थिति में सुधार किया जा सके।

भारतीय जनसंघ के संस्थापक इस विद्वान ने 1929 से 1947 तक बंगाल विधान परिषद में सांसद का कार्य, 8 अगस्त 1934 से 7 अगस्त 1938 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय की कुलपति पद का कार्य, 12 दिसम्बर 1941 से 20 नवम्बर 1942 तक बंगाल प्रांत के वित्तमंत्री रहते हुए अनेक मानवतावादी कार्य किए हैं जो इनके नाम के साथ सदैव स्मरणीय रहेंगे।

मानव सेवा में समर्पित

उस समय कश्मीर में अलग वजीरे आजम यानी प्रधानमंत्री, अलग विधान परिषद, और अलग झंडा फहराया जाता था। इस प्रकार देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान (झंडे) का प्रचलन था। आप इस सिद्धांत के प्रबल विरोधी थे। इसी दौरान 1950 में भारत में रियासतों का विलयकरण भी हो रहा था। इस कार्य में आपने हैदराबाद का भारत में विलय करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहीं 1943 में बंगाल में पड़े अकाल में जनता को राहत पहुँचाने में तन–मन–धन से उल्लेखनीय कार्य किया। आपके ये सम्पूर्ण कार्य मानव–सेवा की मिसाल रहे हैं।

1950 में भारत यात्रा के दौरान आम भारतीयों की दयनीय दशा का आपके मन पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा था। फलस्वरूप आप मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देकर पूरी तरह मानव सेवा के कार्य में जुट गए। इस कार्य को ही आपने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था।

आपकी स्मृति में ...

डॉ मुखर्जी की याद में 1969 में श्यामाप्रसाद मुखर्जी कॉलेज की स्थापना दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्तर्गत की गई। अहमदाबाद नगर निगम ने एक पुल का नाम डॉ मुखर्जी के नाम पर रखा है। दिल्ली और कोलकाता में एक सड़क नाम ''श्यामाप्रसाद मुखर्जी रोड'' नामांकित किया है। दिल्ली नगर निगम द्वारा निर्मित सबसे ऊँची इमारत का नाम डॉ श्यामाप्रसाद मुखर्जी सिविक सेंटर रखा गया।

दिल्ली नगर निगम ने स्विमिंग पूल कॉम्पलेक्स का नाम श्यामाप्रसाद मुखर्जी रख कर उन्हें सम्मानित किया। बैंगलोर सिटी के मथिकेरे में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी फ्लाईओवर, गोवा की गोवा यूनिवर्सिटी के कैंपस में मल्टीपरपज इनडोर स्टेडियम का नाम डॉक्टर मुखर्जी, मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के कोलार कस्बे का नाम बदलकर डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी नगर रखा गया। देश के हजारों शहरों में मुखर्जी के नाम पर चौक, सर्किल या गार्डन बनाए गए।

जेल में गँवाई जान

आपने जम्मू की प्रजा परिषद पार्टी का गठन कर आन्दोलन छेड़ दिया। 8 जून 1953 को आपने दो झंडे और दो निशान के विरोध में कश्मीर में आन्दोलन के लिए प्रवेश किया। उस समय आपके साथ अटल बिहारी वाजपेयी (तत्कालीन विदेश मंत्री), वैद्य गुरुदत्त बर्मन, टेकचंद आदि अनेक कार्यकर्ता भी थे। चूँकि आपने बिना अनुमति राज्य में प्रवेश किया था इसलिए आपको वहाँ की सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया।

यह विडम्बना है कि मानवतावाद के इस पुजारी की 40 दिन तक जेल में बन्द रहते हुए 23 जून 1953 को रहस्यमय ढंग से मृत्यु हो गई। इनकी मौत का रहस्य आज तक अज्ञात हैं। मगर इनके द्वारा किए गए कार्य आज भी हमें इनकी याद दिलाते रहते हैं।

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'
रतनगढ़ (मध्य प्रदेश)

परमवीर चक्र विजेता

मेजर धन सिंह थापा

अन्तिम दम तक हार न मानी
ऐसे मेजर धन सिंह थापा,
उनके साहस औ' शौर्य से
चीन देश था बच्चो! काँपा।

थोड़े से सैनिक लेकर भी
दुश्मन मारे थे चुन–चुन कर,
पीठ न दिखलाई बच्चो! औ'
डटे रहे सीमा पर मेजर।

किन्तु, अन्त में कैद हुए औ'
बरसों तक थी सही यातना,
भेद चीन को बतलाने से
मेजर ने कर दिया था मना।

आखिर इक दिन चीन देश ने
उनको वापस भेज दिया था,
भारत ने दे परमवीर चक्र
फिर उनका सम्मान किया था।

डॉ. वेद मित्र शुक्ल, नई दिल्ली

'निगल गया पानी' पृष्ठ 7 का शेष....

और उसे लेकर किनारे की ओर चल दिया। काजल को किनारे तक सुरक्षित पहुँचाकर वह वापस पलटा और फिर एक बार तेजी से लहरों को काटता हुआ उनकी ओर चल पड़ा। इस बार बचाव के लिए उसके सामने पूनम थी। डूबते हुए को बचाना आसान नहीं होता है। कहते हैं कि डूबने वाले को तिनका का सहारा होता है।

राहुल ने पूनम को सावधानी से पकड़ा और वह उसे लेकर शीघ्र ही किनारे की ओर चल दिया। इतनी कम उम्र में दो चक्कर लगाकर डूब रही अपने से बड़ी दो लड़कियों को बचाकर लाना आसान नहीं था। मगर यह कठिन कार्य राहुल ने बड़े साहस और हिम्मत के साथ किया।

किनारे पर लाकर उसने उनके पेट में भर गया पानी निकालने की कोशिश की क्योंकि उन दोनों के पेट में काफी पानी जा चुका था। वे होश में नहीं थीं। कुछ देर बाद उन्हें होश आया। होश में आते ही उन्होंने रजनी और पुष्पा के बारे में पूछा।

राहुल ने किनारे पर खड़े लोगों से कहा कि अभी नदी में दो लड़कियाँ और हैं। जिनको बचाना जरूरी है। राहुल के कहने पर कुछ लोग हिम्मत करके नदी के पानी में उसके साथ कूदे और वे रजनी और पुष्पा को भी निकालकर पानी से बाहर लाए। रजनी और पुष्पा को तैरना नहीं आता था इसलिए डूब जाने से उनके पेट में काफी पानी जा चुका था। इस कारण से वे अचेत थी।

उन दोनों को जल्दी ही अस्पताल ले जाया गया। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। उन दोनों को बचाया नहीं जा सका। अस्पताल पहुँचने से पहले ही उनकी साँसों की डोर टूट चुकी थी। नन्हे राहुल के साहसिक प्रयास से काजल और पूनम को जीवन दान मिला था। नन्हा राहुल अपनी जी तोड़ कोशिश से उन दोनों की जिन्दगी वापस लाने में सफल रहा था। यद्यपि उसे रजनी और पुष्पा को न बचा पाने का बेहद अफसोस था।

राहुल के दो बहुमूल्य जीवन बचाने के लिए किए गए इस साहसिक प्रयास के लिए उसकी सराहना की गई। उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। वर्ष 2010 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार देश के प्रधानमन्त्री जी द्वारा राहुल को दियाक गया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

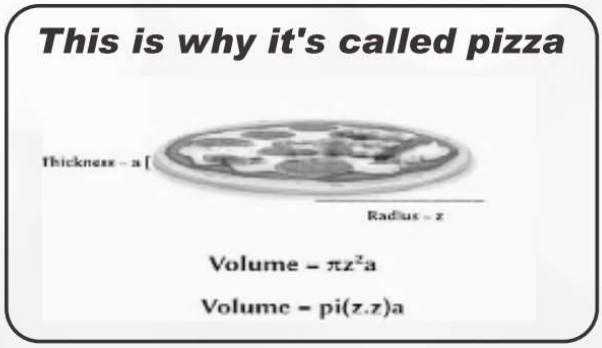

होनहार बच्चे

परोपकार और दया की सीख देते ये बच्चे

दुनिया में बहुत कम लोग हैं जो दूसरों की मदद करते हैं। ऐसे लोगों को राह दिखा रहे हैं हमारे देश के कुछ किशोर –

आर्यमान लाखोटिया : बनाया गरीबों के लिए टॉय बैंक

कोलकाता में रहने वाले आर्यमान लाखोटिया ने 14 वर्ष की उम्र में महसूस किया कि सम्पन्न परिवार

के बच्चों को जरूरत से ज्यादा खिलौने मिल जाते हैं लेकिन गरीब बच्चे अकसर खिलौनों से खेलने के सुख से वंचित रह जाते हैं। ऐसे में उसने अपनी 16 वर्षीय चचेरी बहन अनुष्का साहू और उसकी सहेली राशि चौधरी के साथ मिलकर एक टॉय बैंक बनाने का निश्चय किया। इसका नाम रखा द टॉय जॉय फाउंडेशन। इसके लिए आर्यमान ने एक फेसबुक पेज बनाया और लोगों से खिलौने दान करने की अपील की। वर्तमान में वह देश के सात–आठ शहरों में खिलौना बैंक चला रहा है और अब तक वह कम से कम 20,000 खिलौने बाँट चुका है।

जबी खान : बनाया स्ट्रीट डॉग्स के लिए आवास

हैदराबाद के निवासी जबी खान को बचपन से ही पशु पक्षियों से प्यार था। 13 वर्ष की उम्र में वह एक एनजीओ से जुड़कर उसके साथ जानवरों की बेहतरी के काम करने लगा था। 16 वर्ष की उम्र में

उसने इधार–उधार भटकते और परेशान होते स्ट्रीट डॉग्स के लिए खुद ही आशियाना बनाने का निश्चय किया। उसने अपनी पॉकेट मनी से किराए पर जगह ली और अपना संगठन "ए प्लेस टू बार्क" रजिस्टर्ड करा लिया। अपने 18वें जन्मदिन पर उसने इसकी शुरुआत की। बाद में इंजीनियरिंग की पढ़ाई करते हुए वह सुबह 4:00 बजे सभी कुत्तों को सँभालता फिर कॉलेज जाता। उसने अपने कॉलेज प्रशासन और प्रिंसिपल को अपने उपक्रम के वीडियो दिखाए तो उन्होंने प्रभावित होकर कॉलेज परिसर में ही उसे जगह दे दी ताकि उसकी पढ़ाई पर प्रतिकूल असर ना पड़े। जबी कहता है– ''आप कुछ अच्छा करने की ठान ले तो आपको कोई नहीं रोक सकता।''

अंकिता वोंतेला और रिया थक्कल : बच्चों की मानसिक सेहत के लिए सेवा

मानसिक रोगों से परेशान गरीब बच्चों की दयनीय दशा सुधारने के लिए हैदराबाद की अंकिता और रिया ने मेंटल हेल्थ अवेयरनेस और इलाज से वंचित गरीब बच्चों के लिए "विश्वास" नामक संस्था शुरू की। इन दोनों द्वारा 17 वर्ष की उम्र में 2019 में शुरू किए गए "विश्वास" के पास 40 स्वयंसेवक हैं। यह संस्था मेंटल हेल्थ गाइडेंस के उपयोगी वीडियो बनाकर सर्कुलेट करती है। विभिन्न स्कूलों और

अनाथालयों में भी उन्होंने अपने अभियान की जानकारी दी है। इन दोनों सहेलियों ने अक्षय पात्र नामक संस्था को भी लगभग 15 लाख रुपए इकट्ठा करके दिए हैं ।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प.बंगाल)

चिंकी की चॉकलेट

चिंकी चॉकलेट खाने की कुछ ज्यादा ही शौकीन थी। उसकी यह आदत छुट्टियों के बाद तो और भी बिगड़ गई थी। क्योंकि पहले तो मम्मी उसे दुकान से चॉकलेट लाकर खाने से रोकती थीं मगर अब वह स्कूल जाते समय रास्ते में ही छोटी–छोटी चॉकलेट ले लेती और बस्ते में रख लेती थी। फिर स्कूल समय में अध्यापिका जी से आँख बचाकर खाती रहती। उसकी सहेलियाँ उसे अकसर समझाती कि इतनी चॉकलेट खाना ठीक नहीं। इस पर चिंकी मुस्कुरा कर कहती– ''क्या करूँ ? चॉकलेट मेरी कमजोरी है।''

एक दिन कक्षा में अध्यापिका इंदिरा जी ने चिंकी को पास बुलाया और कोई सवाल पूछा। जैसे ही चिंकी ने बोलने के लिए अपना मुँह खोला, अध्यापिका ने अपने मुँह पर हाथ रख लिया। उन्हें चिंकी के मुँह से बदबू आई। फिर उन्होंने ध्यान से देखा कि चिंकी के दाँतों पर चॉकलेट का कुछ हिस्सा अभी भी चिपका हुआ था। ''चिंकी, क्या तुम सुबह दाँत साफ नहीं करती...? और यह क्या तुमने चॉकलेट से अपने दाँत कितने खराब कर लिए ?''

''मैडम, यह दिन में भोजन कम और चॉकलेट ज्यादा खाती है।'' तभी चिंकी से नाराज हुए बिल्लू ने अध्यापिका से चिंकी की शिकायत करते कहा। ''चिंकी बेटा, यह गलत बात है। मैं तो समझती थी कि मेरी कक्षा में तुमसे सुन्दर कोई लड़की नहीं। मगर यह क्या, दाँतों की सफाई के मामले में तो तुम सबसे पीछे हो। देखो, तुम्हारे दाँत कितने खराब हो चुके हैं। जैसे महीनों से ब्रश नहीं किया हो।'' अध्यापिका ने चिंकी की ठोडी पकड़ कर उसे प्यार से समझाते हुए कहा।

चिंकी सिर झुकाए खड़ी रही। उस पर अध्यापिका की बातों का कोई असर न था। यह बातें तो उसे उसकी सहेलियाँ और मम्मी भी समझाती थी। तभी अध्यापिका ने अपने पर्स से मोबाइल निकाला और सब बच्चों से बोली– ''बच्चो, मैं यह बात तुम सबको भी समझाना चाहती हूँ कि ज्यादा चॉकलेट, टॉफियाँ खाने से हमारे दाँतों पर कीड़ा लग जाता है। क्योंकि चॉकलेट व टॉफियाँ दाँतों में फँसने से बैक्टीरिया पनपते हैं। यह बैक्टीरिया एसिड बनाते हैं और दाँतों को गला देते हैं। दाँतों का सम्बन्ध स्वास्थ्य से भी है और सौंदर्य से भी। दाँत साफ, सुन्दर और मजबूत बने

बूझो तो जानें

1

दशरथनन्दन वे कहलाए
कर रावण का काम तमाम,
जूठे बेर शबरी के खाए
बच्चो, बोलो उनका नाम ?

2

जिसमें रहता मात-पिता संग
जहाँ मिलता प्यार-दुलार,
सोना-जगना, रहना होता
जहाँ बसता है परिवार।

3

पवनपुत्र वे रामदूत थे
बहुत बड़े थे जो बलशाली,
खोज खबर सीता की लाने
जिन पर जिम्मेदारी डाली।

4

बजा बाँसुरी धेनु चराते
कहलाते थे माखनचोर,
मोर-मुकुट सिर पर धरते थे
यदु कुल के थे वे सिरमौर।

5

रोज सुबह पूरब में उगता
लाल-केसरिया गोला,
दिन में तो गुस्साए रहता
शाम-सुबह को भोला।

माणक तुलसीराम गौड़
बैंगलोर (कर्नाटक)

उत्तर इसी अंक में

रहें तो चेहरा भी खूबसूरत दिखाई देता है। क्योंकि हम जो कुछ भी खाते हैं, दाँतों की बदौलत ही अच्छी तरह चबाने से हमारा हाजमा दुरुस्त रहता है। अब यह देखो एक वीडियो...।''

अध्यापिका ने यूट्यूब पर एक वीडियो दिखाया जिसमें एक डाक्टर बच्चे का वह दाँत निकाल रहा था जिस पर कि ज्यादा टॉफियाँ, चॉकलेट के सेवन से कीड़ा लग चुका था। बच्चा दर्द से कराह रहा था। सभी बच्चे और चिंकी यह सब देखकर थोड़ा डर गए थे। फिर अध्यापिका ने चिंकी को अपनी सीट पर बैठने के लिए कहा और दाँतों की सफाई के प्रति कुछ और बातें समझाने लगी। इसके कुछ दिनों बाद जब अध्यापिका कक्षा में आई और चिंकी को अपनी सहेली से खिलखिला कर हँसते देखा तो उन्होंने कुछ गुस्से से चिंकी को अपने पास बुलाया। सब बच्चे सोच रहे थे कि अब चिंकी की खैर नहीं।

चिंकी अध्यापिका के पास आई तो सहमी हुई थी। ''चिंकी, तुमने मुझे बताया नहीं कि तुमने ढेर से मोती छुपाए हैं?'' ''मैंने कौन से ढेर से मोती छुपाए.. .मैम, मैं कुछ समझी नहीं?'' चिंकी अब तो और घबरा गई थी और साथ ही सभी बच्चे भी। ''अरे लगता है तुमने चॉकलेट खाना छोड़ दिया है और दाँतों की भी सफाई रखने लगी हो। अब तो तुम्हारे दाँत मोतियों जैसे चमक रहे हैं, जब तुम सहेली के साथ हँस रही थी तो मैंने देखा और झट समझ गई। यह मोती तुमने अपने मुख में छुपा कर ही तो रखे हैं।'' अध्यापिका जी की गहराई से कही बात का मतलब समझते ही चिंकी के साथ ही सभी बच्चे भी खिलखिला कर हँसने लगे। सच में चिंकी ने चॉकलेट खाना छोड़ दिया था और रोजाना दाँतों की साफ सफाई रखने लगी थी।

हरिन्दर सिंह गोगना
पटियाला (पंजाब)

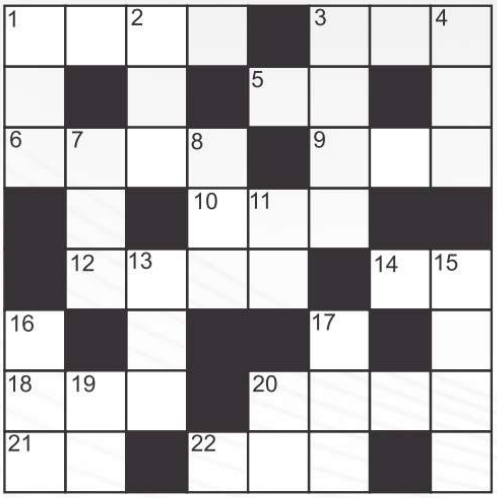

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. प्रशंसा, बड़ाई (4)
3. नवीन, नया (3)
5. तर, गीला (2)
6. चित्तौड़गढ़ का एक वीर (4)
9. बुद्धिमान, होशियार के लिए अँग्रेजी शब्द (3)
10. चार अंकों की सबसे छोटी संख्या (3)
12. मंजूर करना (4)
14. तत्काल बना, नवीनतम (2)
18. तन, देह (3)
20. नौ रंग, व्ही शांताराम की एक सुन्दर फिल्म (4)
21. नियम, सिद्धान्त (2)
22. हिरण प्रजाति का जीव, खारे पानी की झील (3)

ऊपर से नीचे

1. नीरज, कमल (3)
2. पचना (3)
3. प्रणाम, नमन (4)
4. रेखा, निशान (3)
7. कीर्तिवान (3)
8. तरंग (3)
11. प्रस्थान, गमन करना (2)
13. व्याकुल, अधीर (3)
15. मायावी दुनिया को प्रस्तुत करने वाला कलाकार (4)
16. शक्कर में पानी डालने से बना घोल (3)
17. मल्लाह, केवट (3)
19. रिवाज, चलन, प्रथा (2)
20. आकाश, गगन (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि वर्षा ऋतु को देखकर कोयल और रहीम के मन ने मौन साध लिया है। अब तो मेढक ही बोलने वाले हैं। हमारी तो कोई बात ही नहीं पूछता। अभिप्राय यह है कि कुछ अवसर ऐसे आते हैं जब गुणवान को चुप रह जाना पड़ता है। उनका कोई आदर नहीं करता और गुणहीन वाचाल व्यक्तियों का ही बोलबाला हो जाता है।

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधे मौन,
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछे कौन।

उठ प्यारे !

उठ प्यारे, अब भोर हो गई,
रात अँधेरी दूर खो गई।

मुर्गा आकर बाँग दे गया,
आलस अपने संग ले गया।

पूरब में सूरज उग आया,
सतरंगी किरणें है लाया।

हो तैयार, स्कूल है जाना,
नहीं चलेगा आज बहाना।

दीदी उठ तैयार खड़ी है,
ले जाने को साथ अड़ी है।

दादी पूजा से उठ आईं,
देने को प्रसाद हैं लाईं।

सुन लो, बस का हॉर्न बज रहा,
नहीं रुकेगी, यही कह रहा।

श्याम पलट पांडेय
अहमदाबाद (गुजरात)

नई किताबें

नया सत्र है नई पढ़ाई,
दिन चमकीले आए।
चहक– चहक कर बच्चों ने,
फिर, गीत सुरीले गाए।।

नई किताबों ने बस्तों में,
अपनी जगह बनाई,
नई किताबें ले बच्चों ने,
मन अपने बहलाए।

चीनू–मीनू नई साइकिल,
लेकर चले स्कूल,
ठुमक– ठुमक कर छोटे बच्चे,
उँगली थामें आए।

तिक्की बंदरिया का बच्चा,
मम्मी से जा बोला,
मम्मी रंग–बिरंगे बस्ते,
मुझको भी मन भाए।

माँ जाना स्कूल मुझे भी,
कॉपी–पेन दिला दो,
मुझे किताबें पढ़नी सारी,
मेरा मन ललचाए।

राजकुमार निजात
सिरसा (हरियाणा)

नाटिका

सही फैसला

पात्र-परिचय : 1. छत्रपति शिवाजी 2. तानाजी : शिवाजी का अंगरक्षक 3. बालक : सैनिक पुत्र 4. कुछ सैनिक एवं 5. दरबारीगण

दृश्य : एक

(छत्रपति शिवाजी का शयनकक्ष। एक विशाल पलंग पर शिवाजी गहरी नींद सोए हुए हैं। कक्ष के चारों ओर सैनिकों का पहरा है तथा शिवाजी के अंगरक्षक तानाजी शिवाजी के सिरहाने तलवार लेकर पहरा दे रहे हैं। अचानक एक बालक हाथ में तलवार लेकर शयन कक्ष में प्रवेश करता है और शिवाजी के पलंग के पास पहुँच कर उन पर वार करने को तत्पर होता है।)

तानाजी : (बालक का हाथ पकड़ कर एक ओर ले जाकर) ठहरो! यह क्या कर रहे हो? तुम कक्ष के अन्दर कैसे आए? तुम्हारी इतनी हिम्मत कैसे हुई?

बालक : देख नहीं रहे? मैं सैनिकों की आँखों में धूल झोंक कर यहाँ तक आया हूँ। हिम्मत की क्या कमी है मुझमें ?

तानाजी : मानना पड़ेगा हिम्मत तो है। मगर प्रजा के दुलारे महाराज शिवाजी पर प्रहार? आखिर इसकी कुछ वजह भी तो होगी ?

बालक : कोई भी काम बेवजह नहीं होता। पर तुम कौन होते हो वजह पूछने वाले ? जाओ नहीं बताता। (तानाजी और बालक के वार्तालाप से शिवाजी की नींद खुल जाती है और वह उठ कर बैठ जाते हैं।)

शिवाजी : (आश्चर्य से बालक की ओर देखकर) बालक, आधी रात को तुम मेरे कक्ष में क्या कर रहे हो? (फिर ताना जी की ओर देख कर) मैं हैरान हूँ यह यहाँ तक कैसे पहुँचा? आप सब क्या कर रहे थे?

तानाजी : महाराज! क्षमा कीजिए। यह बालक बहुत ही शातिर दिखता है। मैं तो कब से ही इस पर नजर रखे हुए था। यह सैनिकों की निगाहों से बचकर यहाँ तक तो पहुँच गया था परन्तु मेरी नजर इस पर पड़ ही गई थी।

शिवाजी : (हैरान होकर) फिर तुमने इसे इतना बड़ा कदम उठाने से पहले ही गिरफ्तार क्यों नहीं कर लिया?

तानाजी : महाराज! मैं देखना चाहता था कि आखिर यह किस हद तक जाता है। मगर अब देख रहा हूँ यह तो चट्टान की तरह अडिग इरादा लेकर आया है।

शिवाजी : (हैरानी से) हाँ बहुत हिम्मत दिखाई है इस बालक ने। वह भी अपने महाराज को मारने के प्रयोजन के लिए। जरूर इसके पीछे कोई बड़ी वजह होगी। हमें वह जाननी चाहिए।

तानाजी : अवश्य महाराज। (फिर बालक की ओर मुँह करके) बालक, क्या तुम्हें यहाँ तक आने में भय नहीं लगा? क्या तुम यह नहीं जानते थे कि पकड़े जाने पर तुम्हें मृत्युदंड दिया जा सकता है?

बालक : जानता था– या तो अथाह धन या मृत्युदंड।

शिवाजी : (हैरान होकर) अथाह धन? वह कैसे प्राप्त होता? भला मेरे मरने से धन की प्राप्ति कैसे और किससे हो सकती है?

बालक : उन्हीं द्वारा जिनके लिए आपके प्राण कीमती हों?

शिवाजी : यानी कि शत्रु? क्या कह रहे हो? मेरा शत्रु कौन ?

बालक : सुभागराय।

शिवाजी : (सोचने की मुद्रा में) सुभागराय? फिर तो सच कह रहे हो। वह तो सचमुच मेरे प्राणों का प्यासा है। क्या कहा उसने?

बालक : वह एक दिन आकर मुझसे मिला और बोला– यदि तुम शिवाजी को मार दो तो मैं तुम्हारा जीवन–पर्यंत भरण–पोषण करता रहूँगा।

शिवाजी : भरण–पोषण? और तुम मान गए? भला तुम्हें भरण–पोषण के लिए मदद लेने की जरूरत क्यों पड़ गई ?

बालक : क्योंकि मैं पितृहीन हूँ। मेरे पिताजी की युद्ध में मृत्यु हो चुकी है। वे आपके भूतपूर्व सैनिक थे। मेरी माँ बहुत बीमार है। घर में अन्न का एक दाना भी नहीं है। ऐसे में मदद नहीं लूँ तो और क्या करूँ?

तानाजी : महाराज, धन के लोभ में यह बालक आपके प्राण लेना चाहता था। मेरा ख्याल है इसे रात भर कैदखाने में रखकर कल सुबह मृत्युदंड देना चाहिए।

बालक : (तानाजी की ओर हाथ जोड़कर) मैं जानता हूँ मेरे अपराध की सजा मृत्युदंड है और वह मुझे मिलना ही चाहिए परन्तु फिर भी मेरी एक विनती है।

शिवाजी : बोलो, क्या चाहते हो?

बालक : महाराज, मेरी माँ बहुत बीमार है। उसे मेरे बारे में कुछ भी नहीं पता। यदि आप आज्ञा दे तो मैं मरने से पहले एक बार उससे मिल आऊँ। उससे मिलने के बाद मैं कल सुबह फिर आपके दरबार में हाजिर हो जाऊँगा।

तानाजी : अरे वाह! एक और चतुराई। बहाना बनाकर यहाँ से भागना चाहते हो। भला एक बार छूटने के बाद कोई प्राण दंड पाने के लिए आता है? (कह कर जोर–जोर से हँसता है। बालक हाथ जोड़कर कभी शिवाजी की ओर देखता है तो कभी तानाजी की ओर)

शिवाजी : (गम्भीर मुद्रा में) तानाजी, इस बालक को जाने दिया जाए। यदि यह अपनी माँ से मिलकर आना चाहता है तो अवश्य मिल कर आए।

तानाजी : (आश्चर्य से) मगर महाराज इसे मृत्युदंड दिया जाना है। यह कल नहीं आया तो ?

शिवाजी : निश्चिंत रहिए। यह अवश्य आएगा।

बालक : महाराज की जय हो। (कह कर प्रस्थान)

दृश्य दो

(शिवाजी महाराज का दरबार। शिवाजी सिंहासन पर बैठे हैं। उनके पास में तानाजी खड़े हैं तथा चारों ओर दरबारी बैठे हैं। तभी उसी बालक का प्रवेश।)

बालक : महाराज की जय हो। देखिए मैं अपने वादे के अनुसार अपनी सजा पाने के लिए फिर हाजिर हूँ।

तानाजी : (हैरानी से) महाराज! घोर आश्चर्य! बालक प्राण दंड पाने के लिए फिर हाजिर हो गया है। मैंने ऐसा निडर बालक पहले कभी नहीं देखा।

सभी दरबारी (सम्मिलित स्वर में) : घोर आश्चर्य! घोर आश्चर्य! ऐसा पहले कभी नहीं देखा। यह बालक कुछ अति दृढ़ निश्चयी है।

शिवाजी : निःसंदेह यह बालक वीर और स्वाभिमानी है और क्यों ना हो? यह हमारे भूतपूर्व सैनिक का बेटा जो है। बालक हमारे पास आओ। (बालक शिवाजी के पास आता है।)

शिवाजी : बालक, हम तुम्हारे साहस और संकल्प से बहुत प्रभावित हुए। अतः हम तुम्हारा मृत्युदंड माफ करते हैं।

सभी दरबारी (सम्मिलित स्वर में) : महाराज की जय हो। महाराज की जय हो। मगर इसने अपराध तो किया ही है।

तानाजी : महाराज, केवल सुबह प्राण दण्ड पाने के लिए वापिस हाजिर हो जाने से इसका

अपराध कम नहीं हो जाता। अतः इसे माफ करना कहाँ तक उचित है? आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?

शिवाजी : तानाजी, तुम नहीं जानते। बालक से पहले हमसे अपराध हुआ है।

सभी दरबारी : (आश्चर्य से) आपसे? आप अपराध कर ही नहीं सकते। भला आप ने क्या अपराध किया है?

शिवाजी : जानते हो यह हमारे भूतपूर्व सैनिक का बेटा है और इसके घर में अन्न की कमी हो गई। इसी कारण यह बालक इस जघन्य अपराध करने को मजबूर हो गया। और यह सब इसलिए हुआ है क्योंकि हम युद्ध में मारे जाने वाले सैनिकों के परिवार के भरण–पोषण की जिम्मेवारी नहीं लेते और उनको उन्हीं के हाल पर छोड़ देते हैं। यदि हमने उनका ध्यान रखा होता तो आज इस बालक को यह कदम उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

तानाजी : महाराज! आप धन्य हैं। सचमुच आप धीर, वीर और गम्भीर हैं।

शिवाजी : आज से इस बालक को हमारे संरक्षण में रखा जाए तथा इसका और इसकी माँ के सम्पूर्ण भरण–पोषण की व्यवस्था की जाए। हाँ केवल इसके ही नहीं अपितु आज से हम उन सभी सैनिकों की परिवारों के भरण पोषण की भी जिम्मेदारी लेते हैं जो युद्ध में मारे गए हैं या मारे जाएँगे।

तानाजी : महाराज, सचमुच आपने अपने विवेक से सही निर्णय लिया है। यह निर्णय लेकर आपने अपनी प्रजा पालक होने का पुख्ता सबूत दिया है। अतः मैं आपके चरणों में शीश नवाता हूँ। (कहकर महाराज के चरणों में गिर जाता है।)

सभी : छत्रपति शिवाजी की जय। छत्रपति शिवाजी की जय।

कुसुम अग्रवाल
कांकरोली (राजस्थान)

यहाँ आठ पेड़–पौधों की पत्तियों के चित्र दिये गये हैं। आप पत्तियों के आधार पर पेड़–पौधे का नाम उसके नीचे लिखें और सही उत्तर की जाँच करें।

.....

.....

.....

.....

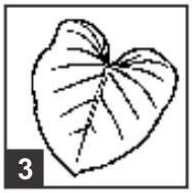

.....

.....

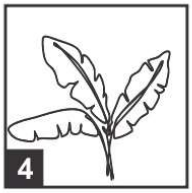

.....

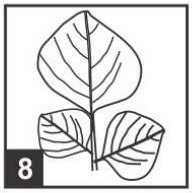

.....

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

उत्तर इसी अंक में

आत्मकथा

बावड़ी का दर्द

मेरी दर्दभरी कहानी अब मैं ही क्या कहूँ? कभी मैं बावड़ी थी, सब की चहेती! खेत के किनारे, नीम की छाँव में, पानी से लबालब! पत्थर के दो खम्बों पर टिका एक मोटा डण्डा और उसमें पिरोया घूमता लोहे का एक मजबूत चक्का! याद नहीं कब से वह चक्का घूम–घूम कर उस डंडे को घिस रहा था! मेरे चारों ओर चिकने पाटों से पटी सुन्दर जगत, सीढियाँ, डोरी और बाल्टी! सारे मेरी शान बढ़ाते थे। जब कोई पानी के लिए मेरे पास आता, मेरा मन हिलौरे ले उठता! झट मैं प्यासे की बाल्टी में उतरती और उसमें चढ़कर ऊपर आ जाती। किसान खेत में पानी देने के लिए, बैलों के सहारे, मशकें भर–भर कर पानी लेता, क्या कहूँ? मुझे कितनी खुशी होती! खेत की नालियों के जरिये, मिट्टी में बीजों तक पहुँच जाती मैं! बीजों से अंकुर फूटते पौधों को बढ़ते महसूस करती, हरे लहकते खेतों को पकते देखती। आह! सब कुछ कितना सुखदायी था।

कितना प्यारा था वह बीता कल! यूँ तो लोग अकसर मेरी जगह पर बैठ सुख–दुःख की बातें किया करते पर उस रोज उस छोटे से खेत का मालिक– बूढ़ा किसान, वहाँ अकेला बैठा रो रहा था। मैं जान न सकी कि उसका दुःख क्या था ? न जाने क्यों मुझे किसी आने वाले तूफान की 'सांय–सांय' महसूस हुई। अभी कुछ ही दिन बीते थे कि खाली खेत में कुछ लोग आने जाने लगे। खेत की नाप–जोख होने लगी। जगत पर बतियाते लोगों की बातों से जान पड़ा बूढ़े किसान के खेत के साथ मैं भी बिक गयी थी!

मालिक बदल जाने का दुःख मुझे भी बहुत हुआ। पर आगे जो कुछ घटने वाला था उसका अन्दाजा मुझे जरा भी नहीं था। उस दिन मैंने गाड़ियों की घरघराहट सुनी। वाहनों से उतरकर कुछ लोग मेरी जगत पर बैठ गये– "आओ जी।" मैंने स्वागत किया पर उन्होंने जैसे मेरी बात अनसुनी कर दी। शायद वो अपनी किसी समस्या पर विचार कर रहे थे।

दो ही दिन बीते होंगे, सुबह का समय था, अचानक मेरी बाल्टी रस्सी सहित मेरी गोद में आ गिरी! क्या हुआ? मैं घबरा उठी। फिर शान्त होकर इन्तजार करने लगी कि कोई न कोई काँटा डालकर ऊपर खींच लेगा। ऐसा कई बार होता था, पर इस बार ऐसा कुछ न हुआ! कुछ हँसने की आवाजें भर सुनी मैंने! फिर ठोंकने–पीटने की आवाजें आने लगी और मैंने देखा, किसी ने पाटियों में अटका लोहे का डण्डा और चरखी निकाल ली। मैं देखती रह गयी। मेरे माथे का झूमर जैसे किसी ने खींचकर छीन लिया हो।

मन में एक तूफान उठने लगा। जरूर कोई अनिष्ट होने वाला है बस, उसके बाद मत पूछो मेरे आसपास खड़े नीम के दोनों पेड़– मेरे भाई काटकर गिराये गये– बेरहमी से! मेरे भीतर गिट्टी–पत्थर और कत्तल बरसने लगे आह! मैं मेरा तल, दीवारें और सीढ़ियाँ उस मार से घायल हो रहे थे। मेरा जल टुकड़े–टुकड़े हो रहा था। हर बार गिरने वाले सख्त मलबे से मैं ऊपर उठ आती। शायद, लोग मुझे देख

देखें पृष्ठ 25...

फैंसी ड्रेस

कुहू के स्कूल में होने वाली फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में वह क्या बने? इस सवाल पर विराम लग चुका था। डॉक्टर, फौजी, नेता, अभिनेता, फल, सब्जियों के सुझाव के बाद मम्मी का कुहू को ट्रैफिक सिग्नल बनाने के विचार पर सबने अपनी सहमति दे दी थी पर कुहू को चिन्ता थी– "मम्मी, मैं ट्रैफिक सिग्नल कैसे बनूँगी? क्या कहूँगी बनकर...।" "तुम चिन्ता मत करो, यूट्यूब में देखा है मैंने ट्रैफिक सिग्नल की गत्ते की पोशाक मैं बना लूँगी।" "तुम क्या बोलोगी, यह मैं तुम्हें लिखकर दे दूँगा। तुम बस याद कर लेना।" मम्मी के साथ कुहू के दादाजी ने भी उसे तसल्ली दी तो वह उत्साह से भर गई।

मम्मी ने यूट्यूब में देख देखकर कार्डबोर्ड काटकर उसमें रंगीन कागज चिपकाकर लाल पीले और हरे रंग के तीन गोले चिपकाए। तिकोनी टोपी में भी लाल, पीले और हरे रंग के तीन गोले क्रमवार लगाए और दादाजी ने तीनों रंगों का महत्त्व समझाते हुए कविता की पंक्तियाँ लिखी और उसे याद करवाई। जिस दिन प्रतियोगिता थी उस दिन पापा ने उसकी ढेर सारी फोटो खींची और दादी ने उसका जोश बढाया। उसकी बलैयां लेकर उसे जीतने का आशीर्वाद दिया।

सबकी खुशी का ठिकाना नही रहा जब कुहू फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में स्कूल से प्रथम पुरस्कार जीत कर लाई। ट्रैफिक सिग्नल बनकर उसे इतना मजा आया कि वह अब रोज ही जब तब गत्ते और कागज से बनी पोशाक पहनकर सबको ट्रैफिक नियम बताने लगी है। शाम को दादाजी सैर करके जैसे ही बरामदे में आए कुहू दौड़कर उनके सामने आ गई और एक हाथ से उन्हें रोकते हुए बोली–

लाल रंग की मेरी बत्ती,
कैसे नहीं पड़ी दिखाई?
नियम तोड़कर दादा जी,
क्यों अपनी गाड़ी है दौड़ाई?"

कुहू के चुलबुलेपन पर दादाजी हँसते हुए बोले– ''बिटिया रानी! मैं तो पैदल आ रहा हूँ। गाड़ी कहाँ हैं मेरे पास?''

इस पर कुहू बगल से निकलती दादी को दोनों हाथ फैलाकर रोकती हुई बोली–

पैदल वालों रखना ध्यान,
कर लो क्रॉसिंग की पहचान।
जेब्रा क्रॉसिंग इसको कहते,
सड़क पार इसी से करते।"

"ओफ्फोह, फैंसी ड्रेस न हुआ मुसीबत हो गई।" दादी उसकी मस्ती पर झुँझलाई तो मम्मी भी बड़बड़ा उठी– ''बहुत हुआ कुहू...अब रोज–रोज इसे पहनकर सबको तंग मत किया करो।"

पर कुहू कहाँ मानने वाली थी वह तो घर से बाहर निकल गई और सामने वाले वर्मा अंकल को रोककर उन्हें ट्रैफिक के नियम सुनाने लगी।

पीली बत्ती पर थम जाना,
अगर लाल हो मत बढ़ जाना।
सिग्नल हरा अगर हो जाए,
ध्यान पूर्वक तब बढ़ जाएँ।
ट्रैफिक को ये सुगम बनातीं
दुर्घटना से हमें बचाती।।

वर्मा अंकल कुहू को देखकर हँसने लगे। सामने से आते कुहू के पापा को देखकर बोले– "कुहू तो पूरे मोहल्ले को सुधारकर ही दम लेगी।" कुहू के पापा ट्रैफिक सिग्नल बनी कुहू को देखकर झेंपते हुए बोले– "ट्रैफिक सिग्नल बनाकर मुसीबत मोल ले ली। सबको तंग करके रखा है।" पापा की शक्ल देखकर लग रहा था कि उन्हें उसकी हरकतें अच्छी नहीं लग रही है। वह कुहू का हाथ पकड़कर घर ले आए और कुछ गुस्से से बोले– "कल से मुझे ट्रैफिक सिग्नल वाली यह ड्रेस दिखनी नहीं चाहिए। अच्छा खासा अपना और हमारा तमाशा बना दिया।"

"उस दिन तो मैं आपको बहुत अच्छी लग रही थी। आज क्यों गुस्सा हो रहे हो?" कुहू ठुनकी तो दादाजी ने भी तुरन्त उसका पक्ष लेते हुए कहा– "अरे, इसमें किसी को क्या परेशानी है। मैं तो कहता हूँ कि रोज–रोज ये पंक्तियाँ बोलेगी तो दिमाग में ट्रैफिक रूल्स अच्छे से बैठ जाएँगे।" "दिमाग में बैठ जाएँगे मतलब?" कुहू ने उत्सुकता से प्रश्न किया तो दादा जी उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोले– "मतलब हमारी प्यारी कुहू कभी भी ट्रैफिक रूल्स नहीं तोड़ेगी।" "दादाजी, क्या पापा ने कभी फैंसी ड्रेस में पार्ट नही लिया?" कुहू के प्रश्न पर दादा जी चौंके और पापा एकदम से बोले– "लिया क्यों नहीं, एक बार डॉक्टर बना था। पेड़ और फौजी भी बना हूँ।" "अरे, मैंगो भी तो बना था एक बार।"

दादी ने याद दिलाया तो कुहू दादी से बोली– "ट्रैफिक सिग्नल क्यों नही बनाया पापा को?'' "अरे बिटिया, तब ये सब आइडिया दिमाग में आते ही नहीं थे।" "तभी तो।" कुहू अपने गोलमटोल गाल पर हाथ रखकर कुछ सोचती हुई बोली तो सबके साथ उसके पापा भी चौंके। "तभी तो क्या?" पापा ने हैरानी से पूछा। "अरे, तभी तो आप ट्रैफिक रूल्स नहीं जानते हो।" यह सुनते ही पापा सकपका कर बोले– "क्या कह रही हो। जानता हूँ, बहुत अच्छी तरह जानता हूँ।" पापा की बात सुनकर वह जोर से बोली– "फिर उस दिन आपने जेब्रा क्रॉसिंग से रोड क्यों नहीं क्रॉस की थी। स्कूटर कार, बस सबको हाथ देते हुए मुझे रोड क्रॉस करवाया था। सबकी पों–पों सुनकर मैं कितना डर गई थी।"

"वो वो दरअसल।" पापा सफाई देते उससे पहले ही वह फिर बोली– "और उस दिन बेकरी जाते समय चौराहे पर लाल बत्ती थी तब भी आपने स्कूटर आगे बढ़ा लिया था।" "अच्छा, आपने ऐसा किया था क्या?" मम्मी आश्चर्य से बोली तो पापा झेंपते हुए कुहू और सबसे आँखे चुराते हुए बोले– ''सॉरी, वो तो बस ऐसे है। जल्दी में था।'' तभी कुहू बोल पड़ी।

''जल्दी में भी रखना ध्यान,
जोखिम में मत डालो जान
सदा नियम का पालन करना,
खुद को सदा सुरक्षित रखना।"

''अरे हाँ, अब समझ गया। अब ऐसी गलती नहीं करूँगा।''

दादाजी कुहू से गम्भीर स्वर में बोले– "तेरे पापा से बड़ी गलती मेरी है। शायद मैं ही ठीक से तुम्हारे पापा को ट्रैफिक रूल्स सिखा नही पाया।" "अरे कैसी बात करते हैं आप पापा, आपने खूब सिखाये ट्रैफिक के नियम, मैं ही लापरवाही कर गया।" सिर झुकाकर बोले।

"फिर मानते क्यों नहीं।" कुहू ने पापा को घूरा तो वह बोले– "ठीक है, अपनी ड्रेस मुझे दे दो। मैं ट्रैफिक सिग्नल बनकर बोलता हूँ।'' ड्रेस पहनकर पापा बोले–

''पीली बत्ती पर थम जाना
अगर लाल हो मत बढ़ जाना।''

पापा को अपनी तरह हावभाव दिखाते और कविता गाते देख कुहू, मम्मी और दादा–दादी सब जोर से खिलखिला पड़े।

मीनू त्रिपाठी
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

'बावड़ी का दर्द' पृष्ठ 22 का शेष...

कर पसीजे, एक बार अपने और मेरे बारे में सोचें और अपने हित में ही सही, मुझे बचा लें। पर वैसा कुछ नहीं हुआ! मैं अपने ही भीतर डूबती चली गयी और देखते–देखते पूरी तरह पाट दी गयी।

मैंने सुना था, वह छोटा सा खेत अब खेत नहीं रहेगा। ऊँची–ऊँची इमारतें बनाने के लिए प्लॉटों में कट जायेगा। एक एक इंच जमीन का अब भारी मोल था। फिर मैंने तो बहुत जगह घेर रखी थी ना। लोगों को अब मेरी जरूरत भी नहीं थी। सुना था, नये–नये तरीक़ों से अब पानी पाने का इन्तजाम हो जाता है। खेत में फसलों की जगह अब सीमेंट, कंक्रीट के जंगल उग आयेंगे। शायद उसी से, इनसान अधिक सुख पायेगा। आराम से रह पायेगा। मैं बांवरी–बावड़ी, मुझे कौन याद करेगा, मेरा दर्द कौन जानेगा? जिस रूप में मैं थी बस परोपकार में खुश थी! पर वह सुख भी मेरे हिस्से नहीं रहा।

पद्मा चौगांवकर
गंज बासौदा (मध्य प्रदेश)

गिनकर बताएँ

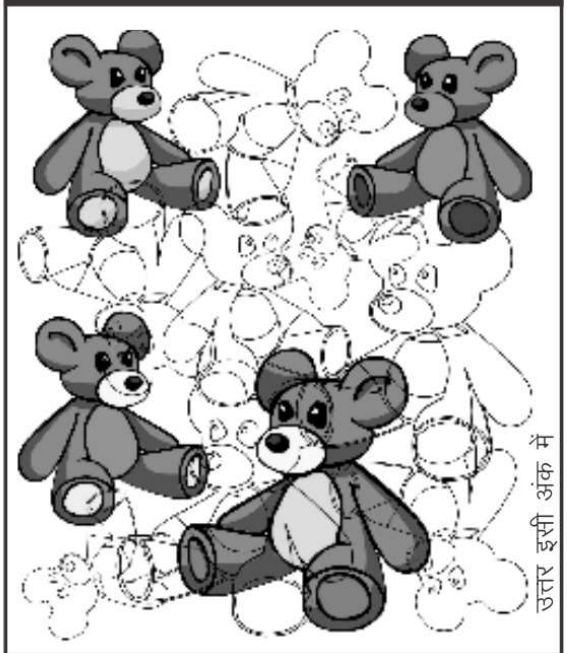

उत्तर इसी अंक में

धर्मपाल डोगरा 'मिन्टू', उना (हिमाचल प्रदेश)

आओ पढ़ें : नई किताबें

कहानी पढ़ने और सुनने के प्रति बच्चों का प्यार व आकर्षण असीम है। वरिष्ठ बाल साहित्यकार एवं शिक्षक राजा चौरसिया की 22 कहानियों की यह पुस्तक जीवन के विभिन्न रंग–रूप सहजता के साथ प्रस्तुत करती है जिन्हें पढ़ना व उसमें निहित संदेश को ग्रहण करना बच्चों को निश्चित ही अच्छा लगेगा। इन कहानियों में परिवेश चित्रण, संवाद, कथानक व प्रस्तुति में लयात्मक मुहावरेदार भाषा का प्रयोग रोचकता बढ़ाता है। सभी कहानियाँ शिक्षाप्रद व ज्ञानवर्द्धक है।

पुस्तक का नाम : गाँव की पूजा **लेखक :** राजा चौरसिया
संस्करण : 2021 **पृष्ठ :** 64 **मूल्य :** 50 रुपये
प्रकाशक : स्नेह प्रकाशन, भोपाल (मध्य प्रदेश)

पहेलियाँ बच्चों की अत्यधिक प्रिय विधा है। वे इन्हें याद करके परस्पर पूछते हैं और इसका आनन्द उठाते हैं। लेखक दीनदयाल शर्मा ने विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध 55 व्यक्तियों के जीवन व विशेषताओं पर इन पहेलियों की रचना की है। इन्हें हर पृष्ठ पर उस व्यक्ति के चित्र के साथ सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। बालक उस प्रसिद्ध व्यक्ति के चित्र व गुणों को एक साथ ग्रहण कर सकेगा। इस प्रकार यह एक रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक पुस्तक बन पड़ी है।

पुस्तक का नाम : प्रेरणाप्रद बाल पहेलियाँ
लेखक : दीनदयाल शर्मा **संस्करण :** 2021
मूल्य : 120 रुपये **पृष्ठ :** 64
प्रकाशक : कलासन प्रकाशन, बीकानेर

बुद्धि और कौशल

बच्चो! हैरी पॉटर फिल्में तुम सबने देखी होगी। इसके 'हैरी पॉटर एंड सौसर्स स्टोन' फिल्म के अंत में जादुई तिलस्म को तोड़ने के लिए हैरी अपने दोस्त के साथ एक खेल खेलता है। यही खेल है शतरंज यानी चेस।

खेल कई तरह के होते हैं। कुछ खेलों में आपको शारीरिक बल और बुद्धि की जरूरत होती है, तो कुछ खेलों में शारीरिक बल के बदले मानसिक बल और कौशल की जरूरत होती है। शतरंज ऐसा ही खेल है, जो आपके मानसिक कौशल को दुनिया के सामने लाता है।

चेस एक बोर्ड गेम है, जो दो खिलाड़ियों के बीच खेला जाता है। दो रंगों के 64 खाने, जो आमतौर पर सफेद और काले होते हैं, में प्रत्येक खिलाड़ी के पास एक राजा, वजीर, दो ऊँट, दो घोडे, दो हाथी और आठ सैनिक होते है। बीच में राजा व वजीर रहता है। उनके दाएँ और बाएँ क्रम से ऊँट, उसके बाजू में घोड़े ओर अन्त में हाथी रहते है। उनकी अगली रेखा में आठ

प्यादा या सैनिक रहते हैं। इस तरह चाल चलने के कुल 16 मोहरे प्रत्येक खिलाड़ी के पास होते हैं। जो खिलाड़ी प्रतिद्वंद्वी के राजा को मात दे देता है, वही विजेता होता है।

दुनिया के बहुत–से देशों का दावा है कि शतरंज की शुरुआत उनके यहाँ हुई। पर बाद में यह मान लिया गया कि यह खेल छठी शताब्दी में भारत ने दुनिया को दिया है। इसे भारत में चतुरंग कहते थे और इसे सेना का खेल माना जाता था।

आठवीं शताब्दी तक यह खेल पर्शिया पहुँचा, जहाँ इसे शतरंज नाम मिला। वहाँ से यह चीन पहुँचा, तो इसे नया नाम मिला जियांग्कि। नौवीं शताब्दी तक यह खेल विभिन्न देशों की यात्रा करते हुए यूरोप पहुँचा और छा गया।

शतरंज पर किताब

शतरंज का खेल लोगों को समझाने के लिए इस पर किताबें भी लिखी गईं। वर्ष 1497 में स्पेन के चर्च के एक कर्मचारी लुइस रेमिरेड डी लुसेना ने एक किताब लिखी। इसका नाम था– 'रिपीटिशन ऑफ लव एंड द आर्ट ऑफ प्लेइंग चेस'।

आरम्भिक चैम्पियन

फ्रांस में 1830 के आसपास पहली बार विविध मुकाबले खेले गए, इसमें फ्रांस के लुईस चार्ल्स माहे दे ला बोर्डोन्नेइस ने आयरलैंड के अलेक्जेंडर मैकडोनाल्ड को हराया। 1851 में पहली बार शतरंज प्रतियोगिता हुई और इसे जर्मनी के एडोल्फ एंडरसन ने जीता। 1886 में प्राग के विल्हेल्म स्टेनिट्ज जर्मनी के जोहान्नस जुकेरटोर्ट को हराकर पहले विश्व चैम्पियन बने।

फीडे का गठन और विश्व चैम्पियनशिप

सन 1924 में वर्ल्ड चेस फेडरेशन (फीडे) का गठन हुआ। फीडे ने 1948 में पहली बार पुरुषों के लिए विश्व चैम्पियनशिप का आयोजन किया। इसमें पाँच सर्वश्रेष्ठ शतरंज खिलाड़ियों को आमन्त्रित किया

का खेल : शतरंज

गया। विजेता रहे रूस के मिखाइल बोत्विनिक। 1993 तक प्रतियोगिता आयोजित होती रही। पर इस 1994 में तत्कालीन फीडे विश्व चैम्पियन गैरी कास्पोरोव ने फीडे से अलग होकर एक अलग चैम्पियनशिप की शुरुआत की और नाम दिया क्लासिक विश्व चैम्पियनशिप। आखिर 2006 में उनका फीडे के साथ मतभेद सुलझा, तो फिर फीडे और क्लासिक विश्व चैम्पियन के बीच मुकाबला हुआ। इसे जीतकर क्लासिक विश्व चैम्पियन ब्लादिमीर क्रैमनिक निर्विवाद विश्व चैम्पियन बन गए।

सर्वश्रेष्ठ शतरंज खिलाड़ी

विश्वनाथन आनंद के विश्व के सर्वोच्च खिलाड़ियों में से एक के रूप में उदय होने के बाद भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी उपलब्धियाँ हासिल की। 1987 में विश्व जूनियर स्पर्धा जीतकर वह शतरंज के पहले भारतीय विश्व विजेता बने। 1987 में आनंद भारत के पहले ग्रैंड मास्टर बने। विश्वनाथन आनंद पाँच बार (2000, 2007, 2008, 2010 और 2012 में) विश्व चैम्पियन रहे हैं।

शतरंज दिवस : कब, क्यों और कैसे

अंतरराष्ट्रीय शतरंज दिवस प्रतिवर्ष 20 जुलाई को मनाया जाता है, इस दिन 1924 में अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ फिडे की स्थापना की गई थी। इसी की याद में अंतरराष्ट्रीय शतरंज दिवस के रूप में 1966 से मनाया जाता है। इस दिन दुनिया भर में शतरंज की घटनाओं और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

कैसे सीखें

यह खेल कौशल पर आधारित है और देखकर सीखना सबसे आसान है। नेट पर सर्फ करो और देखो, ऑन लाइन ट्रेनिंग देने वालों की कमी नहीं है। यू–ट्यूब वीडियोज की सहायता ले सकते हो।

खिलाड़ियों के लिए सर्वोच्च खिताब ग्रैंड मास्टर है। इसके लिए प्रत्येक खिलाड़ी को उसके खेल के आधार पर फेडरेशन अंक देता है, जिसे ईलो रेटिंग कहते हैं। कैंडिडेट मास्टर बनने के लिए 2200, फीडे मास्टर के लिए 2300, इंटरनेशनल मास्टर का खिताब पाने के लिए 2400 ईलो रेटिंग की जरूरत होती है। 2500 ईलो रेटिंग पाने पर ही खिलाड़ी को ग्रैंड मास्टर का खिताब मिलता है।

आजकल भारत के उभरते खिलाड़ी आर. प्रग्नानंदा बहुत चर्चा में हैं। वह भारत के नवीनतम ग्रैंड मास्टर हैं। उन्होंने हाल में ही विश्व चैम्पियन नार्वे के मैग्नस कार्लसन को दो बार हराया। कार्लसन पिछले 10 साल से विश्व चैम्पियन हैं। चीन की जू वेनजुन 2018 से महिलाओं के वर्ग में विश्व चैम्पियन हैं।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

कहानी माचिस की

इंग्लैंड का जॉन वाकर वह व्यक्ति है, जिसे माचिस के आविष्कार का श्रेय प्राप्त है। क्या आप जानते हैं कि इसकी खोज के पीछे एक संयोग की भूमिका थी।

वास्तव में जॉन वाकर कोई वैज्ञानिक नहीं था। वह रासायनिक द्रव्यों का एक व्यवसायी था। एक सुबह वह अपनी दुकान की सफाई कर रहा था, तभी उसके हाथ में अँगुली जितनी मोटी लकड़ी का एक टुकड़ा आ गया। उसने लकड़ी दुकान के बाहर गली में फेंक दी। गली में एक पत्थर से टकराकर लकड़ी जल उठी।

जॉन वाकर आश्चर्य में डूबा दुकान से बाहर आया और लकड़ी का वह टुकड़ा उठाकर ध्यान से देखने लगा। तीन–चार रोज पहले उसने एंटीमनी सल्फाइड और पोटेशियम क्लोरेट का घोल इसी लकड़ी से चलाकर मिलाया था। घोल का अंश लकड़ी के सिरे पर सूख गया था जो पत्थर से रगड़ खाकर जल उठा था। यह सब जानने–समझने के बाद जॉन वाकर के मन में आग जलाने का एक सस्ता साधन तैयार करने की कल्पना जाग उठी।

इसके बाद उसने कुछ प्रयोग किये और सन 1827 ई0 में माचिस की डिब्बियाँ बाजार में उतारने में सफल हुआ। इस प्रारम्भिक माचिस की तीलियों के सिरे पर जॉन वाकर गोंद, स्टार्च, एंटीमनी सल्फाइड एवं पोटेशियम क्लोरेट का घोल लगाता था। तीलियों को रगड़कर जलाने के लिए वह माचिस के अन्दर रेगमाल का एक छोटा टुकड़ा भी रखता था। वाकर की माचिस बहुत सुविधाजनक तो नहीं थी, लेकिन फिर भी बहुत जल्दी लोकप्रिय होने लगी। ऐसी स्थिति में कुछ अन्य व्यवसायियों ने भी माचिस कम्पनियाँ खोल ली। इसे अधिक सुविधाजनक, उपयोगी और सुरक्षित रूप देने के प्रयास भी चलते रहे।

इस सिलसिले में सन 1831 में एक कम्पनी ने ऐसी माचिस बनायी जिसकी तीलियों पर पीला फास्फोरस लगाया गया था। इसमें रेगमाल के स्थान पर तीलियों को रगड़कर जलाने के लिए माचिस की डिब्बी पर ही एक तरफ फास्फोरस का घोल लगाया गया था। यह माचिस जलने में आसान थी। मगर इसमें एक जबरदस्त दोष भी था। इसकी तीलियाँ रगड़ खाकर कभी–कभी अचानक ही जल उठती थी। इस माचिस के चलते कई एक दुर्घटनाएँ हुई थी। इस कमी को दूर करने के लिए स्वीडन के वैज्ञानिक ई.पाश्च ने सन 1844 में पीले फास्फोरस के स्थान पर लाल फास्फोरस का इस्तेमाल किया। ई. पाश्च की युक्ति कारगर सिद्ध हुई, धीरे–धीरे माचिस सारे संसार में बिकने लगी।

इसी बीच माचिस भारतीय बाजार में आई। सन 1916 में ब्रिटिश सरकार ने माचिस पर आयात शुल्क बढ़ाकर साढ़े सात प्रतिशत कर दिया। इससे बचने के लिए विदेशी माचिस कम्पनियों के एजेंटों ने स्थानीय स्तर पर माचिस तैयार करने की कुछ इकाइयाँ स्थापित की। इन्हीं दिनों शिवाकाशी के नाडार बन्धुओं ने कलकत्ता जाकर एक माचिस कम्पनी में माचिस बनाने का काम सीखा। फिर सन 1923 में शिवाकाशी आकर ''महाकलीश्वरी मैच फैक्टरी'' की स्थापना करके अपनी स्वदेशी माचिस बाजार में ले आये। सन 1927–28 के बीच शिवाकाशी में ही करीब एक दर्जन भारतीय उद्यमी अपनी फैक्टरियाँ लगा चुके थे। सन 1930 तक भारतीय माचिस उद्योग घरेलू जरूरत के साथ–साथ म्यांमार की माचिस की माँग भी पूरी करने लगा था। आज माचिस के निर्यातक देशों में भारत का अग्रणी स्थान है।

दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश'
जासापारा सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

दस सवाल दस जवाब

(1) केंद्रीय मंत्रिमंडल के इन मंत्रियों को पहचानिए।
(2) वर्तमान लोकसभा अध्यक्ष कौन है?
(3) भारत के गृहमंत्री किस राज्य से सम्बन्धित है?
(4) पीयूष गोयल किस विभाग के केंद्रीय मंत्री हैं?
(5) केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी के संसदीय क्षेत्र का नाम क्या है?
(6) वर्तमान केन्द्रीय शिक्षा मंत्री कौन है?
(7) रेलवे मंत्री का नाम बताइए।
(8) मुख्तार अब्बास नकवी किस मंत्रालय के मंत्री हैं?
(9) नागरिक उड्डयन विभाग किस सांसद के पास है?
(10) वन और पर्यावरण विभाग किस मंत्री द्वारा संचालित हो रहा है?

उत्तर इसी अंक में

जरा हँस लो

- संता की वोडाफोन में ऑपरेटर का जॉब मिला मगर संता पर पहले ही दिन काफी मार पड़ी और निकाल दिया गया...। क्योंकि पहला कॉलर बोला : सर मेरा वोडाफोन का सिम खराब हो गया है तभी संता बोला डोंट वरी जियो की ले लो...।
- इंटरनेट के आविष्कार से जिन्दगी कितनी आरामदायक हो गई है। ये एक बैंक कर्मचारी से अच्छा कौन समझ सकता है। बड़े मजे से कह देते हैं– सर्वर डाउन है।

प्रस्तुति – दीपशिखा
बीकानेर (राजस्थान)

विशेष – बाल पाठक भी चुटकले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

अपनी भूल अपने ही हाथों से सुधर जाए तो यह उससे कहीं अच्छा है कि कोई दूसरा उसे सुधारे।

❖

निराशा सम्भव को असम्भव बना देती है।

❖

संसार के सारे नाते स्नेह के नाते हैं, जहाँ स्नेह नहीं वहाँ कुछ नहीं है।

❖

सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त होता है, जो अपने कर्तव्य पथ पर अविचल रहते हैं।

❖

दुनिया में विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई भी विद्यालय आज तक नहीं खुला है।

मुंशी प्रेमचंद

बच्चों से...

हँसते–मुस्कुराते रहो
स्कूल आते –जाते रहो।
घर से जो मिले टिफिन
खाते– खिलाते रहो।।

पढ़ते–पढ़ाते रहो
खेलो व खिलाते रहो।
कक्षा में जो पढ़ो पाठ
समझो–समझाते रहो।।

सुनिए–सुनाते रहो
सुख–दुःख बताते रहो।
जो हो बात अच्छी–बुरी
घर पर बताते रहो।।

श्याम मठपाल
उदयपुर (राजस्थान)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

माँ की सीख

जगन किसान गाँव में अपने घर में रहता था। उसके घर के सामने की खुली जगह में नीम का एक बड़ा पुराना पेड़ खड़ा था। जगन और उसकी पत्नी रुक्मणी गर्मी की दोपहरी में नीम की ठंडी छाया में बैठकर आराम किया करते थे। पोते–पोती अपने दादा–दादी के पास बैठे खेला करते थे। जगन के दोनों बेटे भी कभी–कभी फुरसत में उनके पास बैठकर गप–शप किया करते थे।

पेड़ पर एक घोंसला था जिसमें गौरैया पक्षी का एक जोड़ा रहता था। नर गौरैया का नाम मटकू और मादा का नाम छुटकी था। मटकू और छुटकी दोनों सूर्योदय के साथ ही सुबह जल्दी उठकर घोंसले से बाहर निकल जाते। पेड़ की टहनियों पर या घर की मुंडेर पर बैठ जाते या फिर ऊँचे आकाश में उड़कर ताजी हवा का आनन्द लेते। कभी–कभी पास के खेतों में जाकर चुग्गा पानी कर लेते। जगन ने भी नीम के पेड़ की डाली से कुंडे लटकाकर पक्षियों के लिए चुग्गे–पानी की व्यवस्था कर रखी थी जहाँ गौरैया सहित अन्य पक्षी आकर चुग्गा चुगते, पानी पीते। जगन जब अपने परिवार के साथ बैठकर भोजन करता तो मटकू और छुटकी दोनों फुदककर उनके पास आ जाते। जगन रोटी के छोटे–छोटे टुकड़े कर उनको डाल देता जिन्हें मटकू और चुटकी बड़े चाव से खाते। सूरज डूबने के साथ ही दोनों अपने घोंसले में शरण लेकर रात्रि में विश्राम करते।

समय सुख और आराम से बीत रहा था। कुछ दिनों बाद छुटकी ने एक अंडा दिया। कई दिन तक अंडे को सेने के बाद उसमें से एक बच्चा निकला। अब तो उनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं था। उन्होंने प्यार से उसका नाम चुन्नू रखा। दोनों चुन्नू की परवरिश में लगे रहते। जब छुटकी चुन्नू की देखभाल करती तो मटकू बाहर जाकर अपनी चोंच में भरकर चुग्गा लाता और जब मटकू अपने लाडले चुन्नू का लाड–प्यार करता तो छुटकी उड़कर बाहर जाती और चुग्गा लेकर आती। उन्होंने धीरे–धीरे चुन्नू को भी चुग्गा खाना सिखा दिया। अब चुन्नू के छोटे–छोटे पंख निकल आये और वह घोंसले से फुदक कर अपनी मम्मी–पापा के साथ पेड़ की डाली पर बैठने लगा। जगन के पोते–पोती उसको देखकर बहुत खुश होते। वे चुन्नू को अपने हाथों में लेकर उसे खिलाना चाहते। लेकिन जगन उनको यह कहकर मना कर देता कि पक्षियों के बच्चे बहुत नाजुक होते हैं। उनको छूना नहीं चाहिए।

अब चुन्नू जवान हो गया था। उसके पंख भी पूरे विकसित हो गये थे। वह अकेला ही ऊँचे आकाश में उड़ने लगा। पास के खेतों में जाकर अनाज के दाने चुगता। छोटे–छोटे कीड़े–मकोड़े पकड़कर अपना पेट भरता। अपनी उम्र के युवा गौरैया के साथ बैठकर

चूं चूं चीं चीं कर अपना दिल बहलाता और सूरज के डूबने से पहले ही घोंसले में अपनी मम्मी–पापा के पास आ जाता।

एक दिन सुबह चुन्नू जल्दी उठकर जब बाहर जाने लगा तो उसकी मम्मी छुटकी ने उसे अपने पास बुलाकर बड़े प्यार से कहा– ''बेटा चुन्नू, अब तुम बड़े हो गये हो। तुमने उड़ना भी सीख लिया है और हमारी मदद के बिना तुम चुग्गा भी चुग लेते हो।'' ''हाँ मम्मी, यह सब आपने ही तो मुझे सिखाया है।'' चुन्नू ने बड़ी विनम्रतापूर्वक कहा। उसके कथन में उसका आत्मविश्वास झलक रहा था।

छुटकी बोली– ''हम चाहते हैं कि अब तुम अपना जोड़ा बनाओ और अपना स्वयं का घोंसला बनाकर उसमें अपने परिवार के साथ अलग रहो।'' यह सुनकर चुन्नू उदास हो गया। वह बोला– ''नहीं मम्मी, ऐसा मत कहो। मैं तुम्हारे बिना अकेला नहीं रह सकता। मैं तो जगन दादा के परिवार की भाँति आपके साथ रहकर आपकी सेवा करना चाहता हूँ।''

''जगन दादा मनुष्य हैं। इनके अलग कानून कायदे हैं। वे एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं और अपनी संतान से अपेक्षा भी करते हैं कि वह बुढ़ापे में उनकी सेवा करे। अगर इनकी संतान बुढ़ापे में इनकी सेवा न करे तो इनको दुःख और निराशा होती है। लेकिन हमारा परिन्दों का अलग संसार है। हम आत्मनिर्भर होते हैं और हम अपनी संतान से कभी भी यह अपेक्षा नहीं करते कि वह हमारे साथ रहकर बुढ़ापे में हमारी सेवा करे।''

''बेटा चुन्नू, तुम्हारी मम्मी ठीक कह रही है। अब तुम्हें अपनी गृहस्थी अलग बसानी चाहिए।'' मटकू ने सुझाव दिया। ''चुन्नू! तुम चिन्ता मत करो। हम तुमसे मिलते रहेंगे। तुम्हें भी जब हमारी याद आये तो तुम भी अपने जोड़े के साथ यहाँ आकर हम से मिल लेना।''

तभी उन्होंने देखा कि सामने एक युवा गौरैया घर की मुंडेर पर बैठी चूं चूं चीं चीं बोल रही थी। उसे देखकर छुटकी ने कहा– ''चुन्नू, देखो। शायद वह तुम्हें बुलाने आई है।'' मटकू ने बात आगे बढ़ाई– ''हाँ चुन्नू, जाओ बेटा और अपना स्वतन्त्र घर बसाओ।'' चुन्नू ने शर्माते हुए कहा– ''बाई मम्मी! बाई पापा!'' और वह युवा गौरैया के साथ ऊपर आकाश में उडकर ओझल हो गया।

ओम प्रकाश तँवर
चूरू (राजस्थान)

		1		6	5		3	7
3				2	9	1	6	
	6	4						
	2	8			4			3
			1		7			
5			2			6	9	
	8					5	2	
	5	6	9	4				8
9	1		5	8				

5/11/23, 11:54 AM Publications / Magazine | Anuvibha – Anuvrat Global Organisation

व्हाट्सएप कहानी

घर की इकलौती बहू एक प्राइवेट बैंक में बड़े पद पर थी। उसकी सास एक साल पहले ही गुजर चुकी थी। घर में बुजुर्ग ससुर और उसके पति के अलावा कोई नहीं था। पति का अपना कारोबार था। पिछले कुछ दिनों से बहू के साथ एक विचित्र बात होने लगी। बहू जब जल्दी–जल्दी घर का काम निपटा कर ऑफिस के लिए निकलती ठीक उसी वक्त ससुर उसे आवाज देते और कहते– ''बहू, मेरा चश्मा साफ कर मुझे देती जाना।'' रोज ऑफिस के लिए निकलते समय बहू के साथ यही होता। काम के दबाव और देर होने के कारण कभी–कभी बहू मन ही मन झल्ला जाती लेकिन फिर भी अपने ससुर को कुछ बोल नहीं पाती।

जब बहू अपने ससुर की इस आदत से पूरी तरह ऊब गई तो उसने पूरी बात अपने पति को बताई। पति को भी अपने पिता के इस व्यवहार पर बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन उसने अपने पिता से कुछ नहीं कहा। पति ने अपनी पत्नी को सलाह दी कि तुम सुबह उठने के साथ ही पिताजी का चश्मा साफ करके उनके कमरे में रख दिया करो फिर ये झमेला समाप्त हो जाएगा। अगले दिन बहू ने ऐसा ही किया और अपने ससुर के चश्मे को सुबह ही अच्छी तरह साफ करके उनके कमरे में रख आई। लेकिन ऑफिस के लिए निकलने से ठीक पहले ससुर ने अपनी बहू को बुलाकर उसे चश्मा साफ करने के लिए कहा। बहू गुस्से में लाल हो गई लेकिन उसके पास कोई चारा नहीं था। बहू के लाख उपाय के बावजूद ससुर ने उसे सुबह ऑफिस जाते समय आवाज देना नहीं छोड़ा।

धीरे–धीरे समय बीतता गया और ऐसे ही कुछ वर्ष निकल गए। अब बहू पहले से कुछ बदल चुकी थी। धीरे–धीरे उसने अपने ससुर की बातों को नजरअन्दाज करना शुरू कर दिया। ससुर के कुछ बोलने पर वह कोई प्रतिक्रिया नहीं देती और बिलकुल खामोशी से अपने काम में मस्त रहती। गुजरते वक्त के साथ ही एक दिन बेचारे बुजुर्ग ससुर भी संसार से गुजर गए। समय का पहिया कहाँ रुकने वाला था, वो घूमता रहा। छुट्टी का एक दिन था। अचानक बहू के मन में घर की साफ सफाई का ख़याल आया। वह अपने घर की सफाई में जुट गई। तभी सफाई के दौरान ससुर की डायरी उसके हाथ लग गई।

बहू ने जब अपने ससुर की डायरी को पलटना शुरू किया तो उसके एक पन्ने पर लिखा था– "आज की इस भागदौड़, तनाव व संघर्ष भरी जिन्दगी में, घर से निकलते समय, बच्चे अकसर बड़ों का आशीर्वाद लेना भूल जाते हैं जबकि बुजुर्गों का यही आशीर्वाद मुश्किल समय में उनके लिए ढाल का काम करता है। बस इसीलिए, जब तुम चश्मा साफ कर मुझे देने के लिए झुकती थी तो मैं मन ही मन, अपना हाथ तुम्हारे सिर पर रख देता था क्योंकि मरने से पहले तुम्हारी सास ने मुझे कहा था कि बहू को अपनी बेटी की तरह प्यार से रखना और उसकी छोटी मोटी गलतियों को उसकी नादानी समझकर माफ कर देना। वैसे मेरा आशीष सदा तुम्हारे साथ है बेटा!''

डायरी पढ़कर बहू फूट फूटकर रोने लगी। आज उसके ससुर को गुजरे 2 साल से ज्यादा समय बीत चुका हैं फिर भी वह रोज घर से बाहर निकलते समय अपने ससुर का चश्मा साफ कर, उनके टेबल पर रख दिया करती है।

JOIN THE DOTS

localhost:2227/publications 33/52

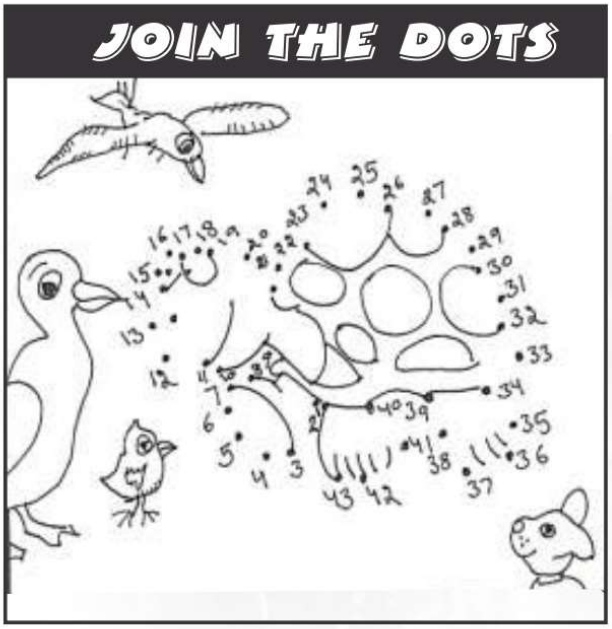

राजू का सरप्राइज

दादाजी का चश्मा टूट गया था। जिस पर घर के किसी सदस्य का ध्यान नहीं जा रहा था। राजू काफी दिनों से दादाजी के टूटे चश्मे को लेकर चिन्तित था। राजू ने प्लान बनाया और ठाना कि वो दादाजी को एक नया चश्मा लाकर देगा। रविवार के दिन जब दादाजी सो रहे थे। तब राजू दादाजी का टूटा हुआ चश्मा चुपके से लेकर चश्माघर चला गया। वहाँ पर उसने पुराना चश्मा दुकानदार को दिखाते हुए नया चश्मा बनाने के लिए कहा। थोड़ी ही देर में दुकानदार ने नया चश्मा बनाकर राजू को दे दिया। राजू नया चश्मा लेकर घर आ गया।

दादाजी अब पहले से ज्यादा परेशान हो रहे थे। उन्होंने राजू को देखते ही पूछा– ''बेटा, तुमने मेरा चश्मा देखा है क्या? अभी सोने से पहले मैंने मेज पर ही रखा था। लेकिन जागकर देखा तो चश्मा वहाँ से गायब था। मुझे तो बिना चश्मे के ठीक से कुछ भी नहीं दिख रहा है। राजू ने थैली में से नया चश्मा निकाल कर दादाजी के हाथों में देते हुए कहा– ''लीजिए, दादाजी ये रहा आपका चश्मा!'' दादाजी ने चश्मा पहना तो वे आश्चर्यचकित रह गए और राजू से बोले– ''बेटा, मेरा चश्मा तो टूटा हुआ था और यह तो नया चश्मा है। ये कहाँ से आया?'' राजू ने पूरी बात का खुलासा करते हुए दादाजी से कहा– ''दादाजी, आपका पुराना चश्मा लेकर मैं अभी चश्माघर गया था और वहाँ से आपके लिए नया चश्मा बनवा कर ले आया। आपको टूटे हुए चश्मे से देखने में काफी दिक्कत होती थी ना! अब नहीं होगी।''

दादाजी भावविभोर होकर बोले– ''बेटा, लेकिन तुम्हारे पास इतने पैसे कहाँ से आये? नया चश्मा बनाने में तो बहुत रुपए लगे होंगे ना?'' राजू ने दादाजी को जवाब देते हुए कहा– ''दादाजी, मेरे पिग्गी बैंक में काफी पैसे इकट्ठा हो गये थे। उससे ही मैंने आपके लिए नया चश्मा बनवाया।'' राजू का उत्तर सुनकर दादाजी की आँखें गीली हो गयी और उन्होंने राजू को गले लगाते हुए उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा– ''शाबाश, बेटा! तूने तो मेरा दिल जीत लिया।''

देखें पृष्ठ 37...

सदा बढ़ता है यह पौधा

बालिका स्तुति को गुलाब के फूल बहुत पसन्द थे। इस बार उसने अपने पिता से कहकर गुलाब के नन्हें पौधे मँगवाए थे। उन पौधों को उसने अपने आँगन में रोप दिया था। वह प्रतिदिन उन पौधों की देखभाल करती। स्कूल से आते ही स्कूल बैग रखकर वह सबसे पहले गुलाब के पौधे के पास पहुँचती, उसे निहारती। हर रोज उसके आकार को मापती। उसे उस दिन का इंतजार था, जिस दिन उन पौधों में गुलाब के सुन्दर रंग बिरंगे फूल खिलेंगे। कुछ दिनों से बेमौसम की बरसात हो रही थी। इस बार बारिश व तूफान का प्रवाह इतना तेज था कि उसके प्रकोप से बड़े–बड़े पेड़ भी धराशायी हो गए।

उस दिन रविवार था। स्कूल की छुट्टी थी। बारिश लगातार पाँच दिनों से हो रही थी। रविवार को स्तुति देर तक सोती थी। बादलों की गड़गड़ाहट ने उसकी नींद में विघ्न डाल दिया। उसने आँखें मल कर घड़ी की ओर देखा, अभी सुबह के छह बजे थे। कुछ देर स्तुति खिड़की से बारिश को देखती रही। इसके बाद वह बिस्तर से उठी और आँगन की ओर भागी, मानो उठते ही कुछ भूल गई हो और अब याद आया हो। गुलाब का नन्हा पौधा गमले से टूट कर एक ओर को गिरा पड़ा था। यह देखते ही स्तुति का दिल धक से रह गया। वह भागी–भागी मम्मी के पास गई। तेजी से उसके कदमों की आहट सुनकर माता पिता दौड़े–दौड़े आए। स्तुति को माँ मंदिरा ने गोद में उठा लिया। रोते–रोते वह बोली– ''मम्मा, गुलाब तो पौधे में आया ही नहीं। पौधा हवा और बारिश के कारण गुलाब निकलने से पहले ही टूट गया।'' मंदिरा उसे समझाते हुए बोली– ''बेटा, आँधी बारिश यदि लगातार चले तो उससे बहुत नुकसान होता है। किसानों की फसलें नष्ट हो जाती हैं। उनकी सारी मेहनत पर पानी फिर जाता है। यह तो एक नन्हा पौधा था। पिताजी तुम्हारे लिए दूसरा पौधा ले आएँगे।'' स्तुति बोली– ''मम्मी क्या बहुत सारे पौधे आँधी बारिश के कारण नष्ट हो जाते हैं, बढ़ नहीं पाते।''

''हाँ बेटा! प्राकृतिक आपदाएँ पौधों एवं पेड़ों को नष्ट कर देती हैं, इसलिए वे बढ़ने से पहले ही मर जाते हैं।'' मंदिरा की बात सुनकर स्तुति बोली– ''मम्मा, क्या इस दुनिया में कोई ऐसा भी पौधा है जिसके ऊपर आँधी, तूफान और बारिश का असर न पड़ता हो और वह हर हाल में बढ़ता रहता हो।'' स्तुति के जिज्ञासा भरे प्रश्न को सुनकर मंदिरा कुछ देर सोच में पड़ गई। कुछ सोचकर वह मुस्करा कर बोली– ''हाँ बेटा, इस दुनिया में एक ऐसा पौधा है जिसके ऊपर किसी भी आपदा का प्रभाव नहीं पड़ता। वह हर हाल में बढ़ता रहता है। इतना ही नहीं जैसे–जैसे वह पौधा बढ़ता रहता है, वैसे–वैसे उस पौधे से इनसान को अनेक लाभ मिलते रहते हैं। उस पौधे के माध्यम से वह अनेक चीजों को सीखता है, अपनी गलतियों को सुधारता है और फिर नई तरह से काम करने लगता है।

''माँ.. माँ वह कौन सा पौधा है? प्लीज बताओ न''। माँ के जिज्ञासा भरे प्रश्न से स्तुति पौधे के टूटने का दुःख कुछ भूल गई थी।'' ''पहले तुम सोचो कि ऐसा कौन सा पौधा है जो हर हाल में

बढ़ता रहता है।'' माँ की बात सुनकर स्तुति पौधों एवं फूलों के बारे में सोचने लगी। वह बोली– ''गेंदा।'' मंदिरा सिर हिलाकर बोली– 'नहीं।' फिर स्तुति ने गेहूँ, चना, दाल से लेकर सूरजमुखी, कनेर एवं जिन पौधों के नाम उसे पता थे, सबके नाम ले दिए। लेकिन उसका जवाब सही नहीं निकला। वह बोली– ''मम्मा, आप ही बताओ न। मुझे तो अब कोई नाम नहीं सूझ रहा। आप तो पहेलियाँ बुझा रही हैं।'' स्तुति को हथियार डालते देख मंदिरा मुस्करा कर बोली– ''अच्छा बाबा, पहेलियाँ बूझना बन्द करती हूँ। उस पौधे का नाम हैं लर्निंग प्लांट।''

स्तुति ठोड़ी पर हाथ रखकर कुछ सोचते हुए बोली– ''लर्निंग प्लांट। यह कौन सा प्लांट है? मैंने मनी प्लांट के बारे में तो सुना है पर लर्निंग प्लांट नहीं सुना।'' मंदिरा बोली– ''लर्निंग प्लांट बहुत अलग है। लर्निंग यानी कि सीखना। हम सभी जीवन भर कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। कोई भी मौसम हो। वर्षा, गरमी, सर्दी, वसंत मनुष्य हर पल सीखता रहता है। उम्र बढ़ती रहती है लेकिन सीखना जारी रहता है। जैसे–जैसे मनुष्य नई–नई बातें सीखता जाता है, वैसे–वैसे वह समझदार और परिपक्व बनता जाता है। तुम स्कूल में शिक्षिका से रोज पाठ पढ़ती हो। वे तुम्हें नई–नई बातें बताती हैं। ये जानकारी और बातें तुम्हारे दिमाग में बैठती जाती हैं।''

''हाँ मम्मा, जैसे आपने आज लर्निंग प्लांट के बारे में बताया। मुझे इसके बारे में पहले नहीं पता था। मेरी सहेलियों को भी इस बारे में कुछ नहीं पता। मैं कल स्कूल जाऊँगी तो अपनी सहेलियों को भी लर्निंग प्लांट के बारे में बताऊँगी।'' ''अच्छा क्या बताओगी लर्निंग प्लांट के बारे में।'' मंदिरा ने आँखें चौड़ी करके कहा।

''यही कि हम सब के पास लर्निंग प्लांट है। हम जैसे सीखते जाते हैं, वैसे–वैसे लर्निंग प्लांट बढ़ता जाता है। सबसे बड़ी बात कि इस प्लांट पर किसी मौसम का बिलकुल प्रभाव नहीं पड़ता। हम वातावरण और परिवेश के हिसाब से सीखते जाते हैं। इस तरह यह पौधा बढ़ता जाता है और फिर एक दिन विशाल पेड़ बन जाता है और छाँव भी देता है।''

''अरे वाह, बेटा, तुमने तो सचमुच लर्निंग प्लांट को बहुत ही अच्छी तरह से परिभाषित कर दिया। लर्निंग प्लांट विशाल पेड़ बनकर सचमुच लोगों को छाँव देता है। वे लोग जो सीख कर शिक्षक या गुरु बन जाते हैं, आगे चलकर लोगों को शिक्षित करते हैं और सिखाते हैं।'' स्तुति बोली– ''मैं भी अपने लर्निंग प्लांट को एक दिन विशाल पेड़ बनाऊँगी। नई–नई बातें सीखकर एक दिन इतिहास रच जाऊँगी।'' स्तुति की बात सुनकर मंदिरा ने उसे गले से लगा लिया और बोली– ''हाँ यही तो है लर्निंग प्लांट का जादू कि हर मौसम बेअसर और सीखता है जो इनसान मन लगाकर, उस पर होता है इसका गहरा असर। वह नई चीजें सीख कर इतिहास रच देता है।

रेनू सैनी
नई दिल्ली

परछाई को पहचानिए

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

'राजू का सरप्राइज' पृष्ठ 34 का शेष...

''दादाजी अभी तो एक और सरप्राइज बाकी है'' राजू ने कहा। ''वो क्या बेटा?'' दादाजी ने उत्सुकतावश पूछा। राजू ने बॉक्स में से केक निकालते हुए दादाजी से कहा– ''हैप्पी बर्थडे डियर दादाजी।'' राजू ने दादाजी के हाथों से केक कटवाना चाहा तो दादाजी ने कहा कि– ''तुम्हारे पापा–मम्मी को आने दो, फिर बर्थ डे मनायेंगे।''

दादाजी ने राजू से पूछा– ''बेटा, ये सब करने की प्रेरणा तुम्हें कहाँ से मिली?'' तो उसने कहा– ''आपसे दादाजी। आपने ही तो पिछले साल मुझे बचत का पाठ पढ़ाते हुए छोटी–छोटी बचत करने की सलाह दी थी। बस, मैंने उसी दिन से मम्मी–पापा, मामा और नाते–रिश्तेदारों के द्वारा दिये गये उपहार स्वरूप पैसों को खर्च करने के बजाय इकट्ठा करना शुरू कर दिया और देखते ही देखते आज इतने पैसे इकट्ठा हो गये कि जिससे आपके लिए नया चश्मा ला सकूँ और आपका जन्मदिन धूमधाम से मना सकूँ।''

दादाजी ने राजू के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा– ''बहुत खूब, बेटा। बचत तो हमारा पहला पड़ोसी है। मुसीबत में बचत ही सगे भाई की तरह काम आती है। बूँद–बूँद से ही घड़ा भरता है और आज तूने बेटा यह साबित करके दिखा दिया।'' तभी राजू के मम्मी–पापा बाजार से खरीदारी कर वापस लौट आये और जब उन्हें राजू के इस कार्य का पता चला तो उन्हें अपने बेटे पर गर्व हुआ। साथ ही उन्हें अफसोस भी हुआ कि उनका ध्यान अपने पिताजी के टूटे चश्मे पर क्यों नहीं गया। दादाजी ने माहौल को हल्का बनाते हुए कहा– ''आओ, सब मिलकर केक काटकर बर्थ डे मनाते हैं।'' सबने ताली बजाकर खुशी प्रकट की।

देवेन्द्रराज सुथार
बागरा जालोर (राजस्थान)

शिक्षाप्रद दोहे

साहित्य में काव्य को सरस विद्या माना गया है। काव्य के विभिन्न रूप है, उनमें दो पंक्तियों की कविता को 'दोहा' कहते हैं। आपने कबीर, रहीम व तुलसी के दोहे अवश्य ही पढ़े होंगे। दोहे की दोनों पंक्तियों में भाव व विषय की समानता एवं सम्बन्ध होता है। इसके अतिरिक्त दोहे की रचना में मात्राओं का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

बनावट की दृष्टि से दोहे की हर पंक्ति के दो भाग होते हैं अर्थात् चार आधी लाइने होती है। उनमें से प्रथम व तृतीय अर्द्धांश की मात्रा 13 होती है जबकि द्वितीय व चतुर्थ अर्द्धांश में 11 मात्राएँ होती है। इन्हीं नियमों को ध्यान में रखते हुए निर्मित कुछ दोहे यहाँ दिये जा रहे हैं। आप इन्हें पढें, समझें और नये दोहे की रचना का प्रयास करें।

मानव जीवन पर बहुत, वृक्षों का उपकार।
नहीं भूलना है हमें, करना उनसे प्यार।।

माँ जैसा मिलता नहीं, सच्चा प्यार दुलार।
मेरी खुशियों के लिए, देखा सदा उदार।।

खिड़की लगती है हमें, घर की सुन्दर आँख।
बाहर का कुछ देखना, लेते उससे झाँक।।

पूज्य सदा माता–पिता, वसुधा के भगवान।
रहती है आशीष से, अधरों पर मुस्कान।।

सरिता का सन्देश है, जीवन है गतिमान।
नहीं थको चलते रहो, मंजिल को पहिचान।।

बेटा–बेटी एक हैं, लेना है संज्ञान।
दोनों से पहिचान है, दोनों से मुस्कान।।

काँव–काँव कागा करे, कर्कश वाणी बोल।
कोयल मीठा बोलती, स्वर में मधुरस घोल।।

शिक्षा देतीं पुस्तकें, भरा ज्ञान भंडार।
जीवन भर पढ़ते रहें, मिलते नये विचार।।

कैलाश त्रिपाठी
अजीतमल (उत्तर प्रदेश)

पर्वतों की रानी : नेतरहाट

'नेतरहाट' झारखंड राज्य का एक मात्र हिल स्टेशन है। हरे वनों की हवा जब सखुआ और पलास की खुशबू लिये बहती है, तब यहाँ आये सैलानी प्रसन्न हो उठते हैं। शहरी कोलाहल से दूर प्रकृति के इस मनोरम आँगन में बिताये गये पल यादगार धरोहर बन जाते हैं। यहाँ स्थित पलामू बंगला या पर्यटन होटल अथवा वन विश्रामागार से कोयल नदी की सुनहरी रेत–राशि के उस पार से उगते हुए सूर्य को देखने वाला पर्यटक अपने आप को धन्य मानता है। पहाड़ी की ऊँचाई से घाटी के नीचे नदी के उस पार बाल–सूर्य के विशाल गोले का सौंदर्य अनूठा है। सायंकाल सूर्य जब थक कर अस्त होने लगता है, तब विन्ध्यपर्वत श्रेणियों की ओट में मैग्नोलिया पॉईंट से यह बहुत सुन्दर दिखता है।

नेतरहाट ही ऐसी जगह है, जहाँ पर्यटक सिर्फ प्रकृति का सौंदर्य निहारने पहुँचते हैं। यहाँ ठहरने के लिए अनेक स्थल बने हुए हैं, किन्तु घूमने और देखने के लिए मात्र प्राकृतिक सौंदर्य है। यहाँ से घने वनों के बीच से होकर गुजरती एक पतली सड़क 15 किलोमीटर दूर निचली घघारी जाती है। वहाँ एक झरना है, जहाँ हजारों फीट की ऊँचाई से जल गिर कर नीचे खाई में जाता है। यहाँ ऊपर से गिरा पत्थर भी कई टुकड़ों में बँट जाता है। ऐसी ऊँचाई से झरते जल को देखकर पर्यटकों का मन हरा–भरा हो जाता है और आँखें फटी की फटी रह जाती हैं।

प्रकृति के इस मनोरम स्थल में देश का प्रसिद्ध नेतरहाट विद्यालय है, जहाँ गांधीवादी विचार धाराओं के अनुरूप राष्ट्र के नौनिहालों को संवारा जाता है। विभिन्न आश्रमों में रहकर अध्ययन कर रहे छात्रों को देखकर प्राचीन गुरुकुल परम्परा की याद आ जाती है।

झारखंड रूपी सोने की अँगूठी में नेतरहाट एक नगीना है। सन 1915–20 तक बिहार और उड़ीसा के राज्यपाल सर एडवर्ड ए. गेटे थे, जिन्होंने इस अद्‌भुत स्थल की खोज की थी। उन्होंने यहाँ लकड़ी का एक घर बनवाया था, जिसे 'शैले हाउस' कहते हैं, जो अतीत की एक अनमोल धरोहर है। आजादी के बाद 15 नवंबर, 1954 को नेतरहाट विद्यालय स्थापित होने पर 'शैले हाउस' को विद्यालय के प्राचार्य का आवास बनाया गया।

नेतरहाट फलों की खेती के लिए भी जाना जाता है। नाशपाती, अंगूर, सेब, आलुबुखारा आदि की यहाँ खेती होती है। मगर नाशपाती की उपज अधिक होती है। यहाँ की नाशपाती रांची के बाजारों में भी मिलती है। अँग्रेजों ने इस स्थल को 'नेचर हर्ट' नाम दिया था, जो कालान्तर में 'नेतरहाट' हो गया। इसे 'पर्वतों की रानी' और 'बिहार की मसूरी' भी कहा जाता था। अब इसे 'झारखंड की मसूरी' कह सकते हैं।

25.6 वर्ग किलोमीटर में फैला यह क्षेत्र रांची से 154 किलोमीटर दूर है। लोहरदगा से इसकी दूरी 78 किलोमीटर है। यहाँ ठहरने के लिये पर्यटन विभाग के होटल और वन विभाग के विश्रामागार बने हुए हैं। जाने के लिए निजी वाहन ही उपयोगी है।

अंकुश्री
सिदरौल रांची (झारखण्ड)

संकल्प से सफलता की सत्यकथा

चार्ल्स ब्लॉन्डिन

फ्रांस के सेंट आमेर प्रांत में सन् 1826 ई. में जन्मा जीन फ्राँकाईस ग्रेवलेट दुनिया का एक अद्‌भुत एवं साहसी कलाकार माना जाता हैं। सामान्य आर्थिक स्थिति के कारण उसे किसी अच्छे विद्यालय में पढ़ने का अवसर न मिल सका। साधारण–सी शिक्षा ग्रहण करने के बाद उसने जिम्नास्टिक विद्यालय में प्रवेश लिया। संकल्प के धनी बालक जीन ने घर पर भी अपना अभ्यास जारी रखा। परिणाम स्वरूप मात्र नौ वर्ष की अल्पायु में ही 10 फीट की ऊँचाई पर रस्सा बाँध कर उस पर चलने का सफल सार्वजनिक प्रदर्शन कर दिखाया। अभी वह किशोर ही था कि पिता का साया सिर पर से उठ गया और पूरे परिवार के भरण–पोषण की जिम्मेदारी बालक– फ्राँकाईस पर आ पड़ी। इस कठिन जिम्मेदारी को उसने अपनी कला का सार्वजनिक प्रदर्शन करके पूरा किया। आगे चलकर उसने अपना नाम जीन फ्राँकाईस से बदलकर चार्ल्स ब्लॉन्डिन रख लिया और उसी नाम से विख्यात हुआ।

एक बार जब वह अमेरिका के प्रवास पर था तो वहाँ उसने विश्वप्रसिद्ध न्यागरा फाल का जल प्रपात देखा। यह झरना अमेरिका और कनाड़ा के बीच मध्य रेखा का काम करता है। यह 360 मीटर चौड़ा है। उसे देखकर जीन ब्लॉन्डिन ने घोषणा की कि वह न्यागरा जल प्रपात के दोनों सिरों पर रस्सा बाँधकर उसे पार करेगा। जब लोगों ने उसकी इस घोषणा को पढ़ा तो किसी को विश्वास नहीं हुआ और उसे मात्र अपने नाम का प्रचार करने वाला बताया। पर जब जीन ने निश्चित तिथि पर अमेरिका वाले भाग से कनाड़ा वाले भाग तक रस्से पर चढ़कर इस प्रकार पार कर दिखाया जैसे कोई दीवार पर चल रहा हो।

कनाड़ा वाले सिरे पर पहुँच कर उसने पुनः उसी रास्ते अमेरिका जाने की घोषणा कर दी। इस बार उसने अपने साथ कैमरा ले लिया था जिससे कि न्यागरा के सुन्दर प्राकृतिक दृश्य का चित्र बीच से लिया जा सके। अभी वह मध्य तक दूरी तय कर पाया था कि सन्तुलन डगमगा गया और उसके हाथ का बाँस प्रपात में जा गिरा और गोते लगाता हुआ अदृष्य हो गया। दुर्घटना की आशंका से हजारों दर्शकों की आहें निकल गयी। किन्तु ब्लॉन्डिन ने रस्से से झूल कर अपना सन्तुलन बना लिया और झरने के मध्य रस्से पर खड़े होकर प्राकृतिक दृश्य के फोटो लेने लगा तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अनेक चित्र लेने के बाद साहसी ब्लॉन्डिन ने सन्तुलन सँम्हालते हुए अनेक करतबों को दिखाते हुए न्यागरा को पार किया।

तीसरी बार उसने अपने बेटे को कंधे पर बिठाकर न्यागरा जल प्रपात को रस्से पर चढ़कर पार किया। ब्लॉन्डिन के पुत्र से जब लोगों ने पूछा कि तुम्हें भय क्यों नहीं लगा? तो उसने बताया कि– ''मुझे अपने पिता की कुशलता, साहसिकता एवं सफलता पर पूर्ण विश्वास है।''

इसके बाद जीन ब्लॉन्डिन जब इंग्लैंड पहुँचा तो वहाँ के लोगों ने एक विश्व विजेता सूरमा की तरह उसका स्वागत किया। अपने 26 दिनों के प्रवास काल में उसने इंग्लैंड में अनेक आश्चर्यचकित कर देने वाले करतब दिखाये और लाखों पौंड कमाये। इसी प्रकार फ्रांस वापस लौटने पर वहाँ की जनता ने उसका हार्दिक स्वागत किया और उपहारों से उसे लाद दिया। एक सुनिश्चित ध्येय और उसके प्रति समर्पित जीवन, मानव को महामानव के गौरवपूर्ण पद पर पहुँचा देती है। जीन ब्लॉन्डिन का जीवन इसका एक सर्वोत्तम उदाहरण है।

इंजी के. एस. सामोता
उदयपुर (राजस्थान)

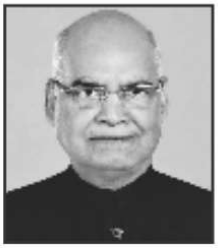

कैसे होता है राष्ट्रपति का चुनाव

राष्ट्रपति देश का प्रथम नागरिक है। देश की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होती है। वही देश का सर्वोच्च सेनापति है। भारत में अब तक 15 राष्ट्रपति चुने जा चुके हैं। 16वें राष्ट्रपति का चुनाव आगामी 18 जुलाई को होगा। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि अब तक एकमात्र व्यक्ति नीलम संजीव रेड्डी सर्व सम्मति से राष्ट्रपति निर्वाचित हुए है।

बच्चो! अब हम जानते हैं कि राष्ट्रपति का चुनाव कैसे होता है?

राष्ट्रपति पद के लिए ऐसा व्यक्ति उम्मीदवार हो सकता है जो–

1. भारत का नागरिक है,
2. 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका है, एवं
3. लोकसभा का सदस्य होने की योग्यता रखता है।

- ❖ राष्ट्रपति का कार्यकाल उसके पदग्रहण करने की तारीख से पाँच वर्ष होता है। (अनुच्छेद 56)
- ❖ राष्ट्रपति पद के लिए निर्वाचित होने वाले व्यक्ति को ईश्वर की शपथ अथवा सत्यनिष्ठा का प्रतिज्ञान करना होता है। (अनुच्छेद 60)
- ❖ राष्ट्रपति का निर्वाचन संसद एवं प्रत्येक राज्य की विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा किया जाता है।
- ❖ वर्तमान में राष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग लेने वाले कुल सदस्य अर्थात निर्वाचक 4809 है। इनमें से 776 सांसद एवं 4033 विधायक है। इन सभी सदस्यों अर्थात् निर्वाचकों के मतों का कुल मूल्य 10,86,431 है।
- ❖ 50 प्रतिशत से अधिक मत पाने वाला प्रत्याशी राष्ट्रपति के पद पर निर्वाचित हो जाता है।
- ❖ नामांकित अर्थात् मनोनीत सदस्य निर्वाचन में मतदान नहीं कर सकते हैं।
- ❖ संविधान के अनुच्छेद 55 के अनुसार राज्य की विधानसभाओं के सदस्यों के मतों की संख्या अर्थात मूल्य निम्नानुसार निर्धारित किया जायेगा–

$$\frac{\text{राज्य की जनसंख्या}}{\text{विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या}} \div 1000$$

अर्थात् किसी राज्य की विधानसभा के प्रत्येक निर्वाचित सदस्य के उतने मत होंगे जितने कि एक हजार के गुणित उस भागफल में हो जो राज्य की जनसंख्या को उस विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या से भाग देने पर आये।

संसद सदस्यों के मतों की संख्या अर्थात मूल्य निम्नानुसार निर्धारित किया जायेगा–

$$\frac{\text{राज्यों की विधानसभाओं के कुल मतों की संख्या}}{\text{संसद के निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या}}$$

अर्थात् संसद के प्रत्येक सदन के प्रत्येक निर्वाचित सदस्य के मतों की संख्या वह होगी जो राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों के लिए नियत मतों की कुल संख्या को संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या से भाग देने पर आये जिसमें आधे से अधिक भिन्न को एक गिना जायेगा और अन्य भिन्नों की उपेक्षा की जायेगी।

- ❖ राष्ट्रपति का निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधिक पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा होगा और ऐसे निर्वाचन में मतदान गुप्त होगा।

वर्तमान राष्ट्रपति का कार्यकाल 24 जुलाई को समाप्त हो जायेगा। 25 जुलाई को नये राष्ट्रपति अपने पद की शपथ ग्रहण कर लेंगे।

डॉ. बसन्तीलाल बाबेल
सरदारगढ़ (राजस्थान)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।' यह किसने कहा?
2. इस बार की चित्रकथा से क्या शिक्षा मिलती है?
3. भारत के 16वें राष्ट्रपति का चुनाव कब होने वाला है?
4. राजू का सरप्राइज क्या था और किसके लिए था ?
5. कुहू की किस आदत से घर वाले परेशान होने लगे ?
6. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने मन्त्रिमंडल से क्यों त्याग पत्र दिया ?
7. पहली बारिश में नहाने से क्या नुकसान है?
8. नाटिका का शीर्षक 'सही फैसला' कहाँ तक उचित है ?
9. माचिस का आविष्कार कब और किसने किया ?
10. जीवन विज्ञान के प्रयोग में बताई गई कौनसी मुद्रा आपको अच्छी लगती है ?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) निर्मला सीतारमण (ब) नितिन गडकरी (स) राजनाथ सिंह (द) किरण रिजिजू (2) ओम बिरला (3) गुजरात (4) वाणिज्य एवं उद्योग (5) अमेठी (6) धर्मेंद्र प्रधान (7) अश्विनी वैष्णव (8) अल्पसंख्यक मन्त्रालय (9) ज्योतिरादित्य सिंधिया (10) भूपेंद्र यादव

अन्तर ढूँढ़िए

(1) बादल अतिरिक्त (2) फुटबाल का आकार बड़ा (3) कुत्ते की पूँछ गायब (4) लड़की की हाफ पेंट का रंग अलग (5) छाते का आकार छोटा (6) बाल का रंग अलग (7) एक लड़का अतिरिक्त (8) टोपी गायब

दिमागी कसरत

(1) पपीता (2) पीपल (3) अरवी (4) केला (5) नीम (6) धनिया (7) कमल (8) ढाक

परछाई को पहचानिए

(1) गिलहरी (2) ऑक्टोपस (3) बकरी (4) मछली (5) मुर्गी (6) कंगारु (7) बंदर (8) साँप

बूझो तो जानें

(1) राम (2) घर (3) हनुमान (4) कृष्ण (5) सूर्य

गिनकर बताएँ

उत्तर – 12

वर्ग पहेली

1 स	रा	2 ह	ना	■	3 न	व	4 ल
रो	■	ज	■	5 न	म	■	की
6 ज	7 य	म	8 ल	■	9 स्का	ल	र
■	श	■	10 ह	11 जा	र	■	■
■	12 स्वी	13 का	र	ना	■	14 ता	15 जा
16 चा	■	त	■	■	17 धी	■	दू
18 श	19 री	र	■	20 न	व	रं	ग
21 नी	ति	■	22 सां	भ	र	■	र

सुडोकू

8	9	1	4	6	5	2	3	7
3	7	5	8	2	9	1	6	4
2	6	4	3	7	1	9	8	5
1	2	8	6	9	4	7	5	3
6	3	9	1	5	7	8	4	2
5	4	7	2	3	8	6	9	1
4	8	3	7	1	6	5	2	9
7	5	6	9	4	2	3	1	8
9	1	2	5	8	3	4	7	6

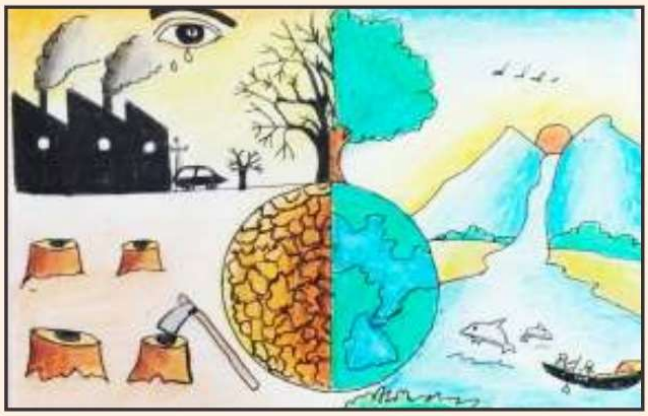

आयशा लोहिया, कक्षा 6, भीलवाड़ा

दीपशिखा, कक्षा 2, बीकानेर

विश्वा सौलंकी, कक्षा 8, उदयपुर

पेड़ बचाओ

सुन्दर और प्यारे ये पेड़–पौधे,
इनको क्यों हम काट देते।
ये हमें छाया और शुद्ध हवा देते,
बदले में हमसे कुछ नहीं लेते।

हम इन पर अत्याचार करते,
पर वह उसकी परवाह न करते,
और हमें खुशहाल बनाते,
इनकी छाल से कागज बनते,
ये पशु–पक्षियों को घर देते,
हम इन्हें काटने से जरा न हिचकते।
इसलिए कहती हूँ
पेड़ बचाओ, पेड़ लगाओ,
वायु प्रदूषण, रोग मिटाओ
संसार को हरा–भरा बनाओ।

अर्चिता तातेड़, कक्षा 7, कोलकाता

गर्विश जैन
कक्षा 7, भीण्डर

स्नेहा चौखड़ा, कक्षा 11, थाणे

आप भी अपनी कलम और कूँची का कमाल हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

जल, जंगल, जमीन और जानवर, हमारे पर्यावरण के आधार
सुरक्षित आज होंगे जब सब, तब होगा कल का सपना साकार

बिजली, अंजलि, पूनम ,दीक्षा

रेशमा, शोमी, सुशीला, निरमा

पायल, पूजा, सुमन, सपना, जशोदा

रेखा, अंजलि, हिना, संगीता

संगीता, रेखा, दरिया, सीता, कोमल, पायल

नेहा, डिम्पल, कनिका, मनीषा, दीपिका

पायल, पूजा, सुमन, सपना

नीरु, मैना, रचना, दुर्गा

निरमा गुर्जर

नेहा, डिम्पल, कनिका, मनीषा, दीपिका

सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन
द्वारा गांवों में संचालित
सखियों की बाड़ी केंद्र,
ब्लॉक- देसूरी, पाली।

अनिता, सुमन, पिंकी, साक्षी, पायल

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

एशिया का सबसे बड़ा थर्मामीटर मॉडल

फलोदी(राजस्थान) को छह साल पहले 19 मई को अधिकतम तापमान 51 डिग्री पहुँचने पर सबसे गर्म कस्बे के रूप में पहचान मिली। तब 12 फीट लम्बा थर्मामीटर मॉडल बतौर स्मारक एडीएम कार्यालय के सामने स्थापित किया गया। हैदराबाद की एक निजी लेबोरेट्री ने सबसे अधिक गर्म स्थल के लोगों में उच्च तापमान के दौरान जन जीवन सुरक्षित रखने का संदेश देने के लिए इसे तैयार किया। थर्मामीटर का निर्माण करने पर लेबोरेट्री के प्रशीन व रवि का नाम इंडिया बुक ऑफ रेकॉर्ड व एशिया बुक ऑफ रेकॉर्ड में दर्ज किया।

यूक्रेन के ओलेस्की हैं सबसे ताकतवर इनसान

यूक्रेन के ओलेक्सी नोविकोव दुनिया के सबसे स्ट्रांग मैन हैं। उन्होंने अमेरिका के सैक्रामेंटो में दुनिया के सबसे ताकतवर इनसान का खिताब जीता। 6 फीट 1 इंच लम्बे नोविकोव का वजन 136 किग्रा है। उनके कंधे 3.6 फीट चौड़े हैं। उन्हें 4 एक्स एल टी-शर्ट भी छोटी पड़ती है।

सेना की पहली महिला लड़ाकू विमान चालक

कैप्टन अभिलाषा बराक भारतीय सेना की पहली कॉम्बैट एविएटर (लड़ाकू विमान चालक) बन गई। नासिक में कॉम्बैट आर्मी एविएशन ट्रेनिंग स्कूल में हुए समारोह में सेना के विमानन महानिदेशक लेफ्टिनेंट जर्नल अजयकुमार ने उन्हें सेना के 36 अन्य पायलटों के साथ विंग्स प्रदान किया। कैप्टन बराक पहली महिला अधिकारी हैं, जो सेना की उड्डयन कमान में शामिल हुई है। उन्होंने यह उपलब्धि कॉम्बैट आर्मी एविएशन पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद हासिल की।

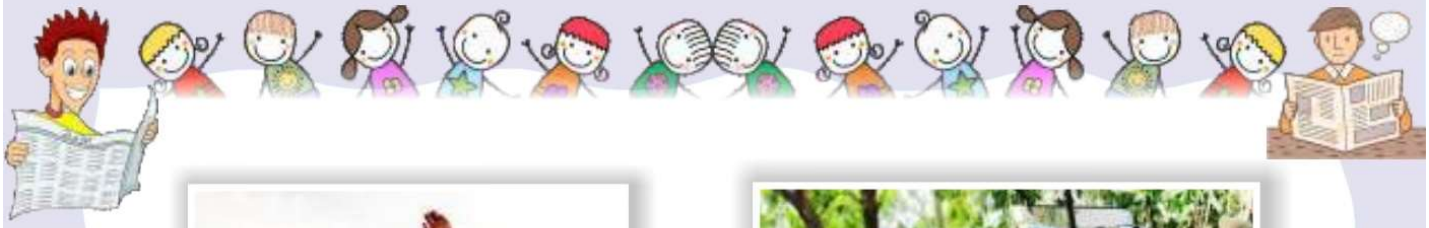

रस्सी पर चलने का विश्व रिकॉर्ड

फ्रांस के नाथन पॉलिन ने टाइट रोप पर चलने का अपना ही रिकॉर्ड तोड़ दिया है। वे 100 मीटर ऊँचाई पर बँधी रस्सी पर 2.23 किमी तक चले। फ्रांस के मोंट-सेंट-मिशेल द्वीप पर दो सेमी चौड़ी रस्सी पर यह दूरी तय करने में उन्हें दो घंटे लगे। नाथन अब एफिल टॉवर और मोंटपर्नासे टॉवर के बीच की 2.7 किमी दूरी रस्सी पर चलकर पूरी करना चाहते हैं।

सौर ऊर्जा चालित इलेक्ट्रिक कार बनाई

केरल में कालीकट के सालू आरवी अपनी इलेक्ट्रिक कार को मीलों तक चला सकते हैं। उन्हें सड़क पर चलने के दौरान इसकी चार्जिंग की चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। चलते-चलते कार की बैटरी खुद चार्ज हो जाती है। इसका कारण इसकी छत से जुड़े तीन सौर पैनल है। यह एक सीटर है। इस पर 20 हजार से कम लागत आई। सालू ने अन्य वाहनों के स्क्रैप का इस्तेमाल करके कार की बॉडी बनाई। इसमें पल्सर बाइक से शॉक अब्जॉर्बर और मारूति 800 से सीट व स्टीयरिंग व्हील लिया गया। इसमें चार लीड एसिड 12 डब्ल्यू बैटरी लगाई है। एक बूस्टर बोर्ड को इससे जोड़ा गया है।

सबसे छोटा किशोर

नेपाल के काठमांडू में दोर बहादुर खापांगी ने गिनीज वर्ल्ड रेकॉर्ड सर्टिफिकेट हासिल किया। उन्होंने दुनिया के सबसे छोटे जीवित किशोर के रूप में रेकॉर्ड बनाया है। इनकी लम्बाई 73.43 सेमी (2 फीट 4.9 इंच) है। उनका जन्म 2004 में हुआ था।

BACHCHON KA CLUB

Humauyn's Tomb

Humauyn's Tomb is the tomb of the Mughal emperor Humayun. It is located in Delhi of India. Humayun was the second emperor of the Mughal empire. He was the son of Babur. Humayun's tomb was built by Mirak Mirza Ghiyath. The construction was initiated by Humayun's second wife Hamida Banu Begum.

-Pratyancha Shaunak, Class -6, Kekri (Rajasthan)

Red Fort

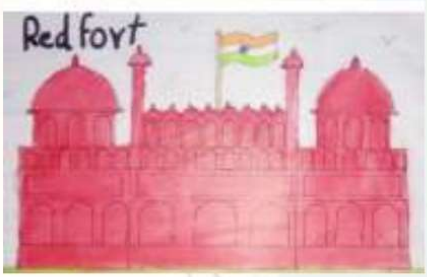

Red Fort is a historical building located in Delhi. The Red Fort was built by Shah Jahan in 1648 AD. Who was a Mughal emperor. This fort has a large museum. A Diwan-e-Aam and a Diwane-e-khas. This fort has been built exactly in the middle of Delhi. Red and sandstone was used to build this fort.

-Akshay, Class -8, Bikaner(Rajasthan)

Gol Gumbaz

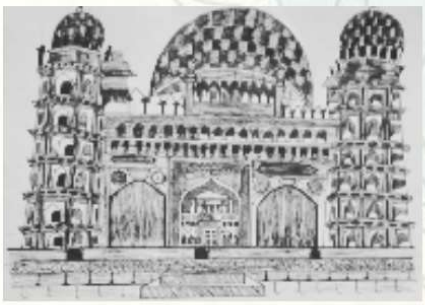

Gol Gumbaz is the most famour monument in Vijaypura, Karnataka. It is the tomb of Mohammad Adil Shah. It is the second largest dome ever built, next in size only to st. Peter's Basilica in Rom. A Particular attraction in this monument is the central chamber, where every round is echoed seven times.

-Shambhavi Sinha, Class -9, Agra

British Museum

The British museum is a public museum dedicated to human history art and culture located in the bloomsbury area of London. Its permanent collection of 8 million works is among the largest and most comprehensive in existence. It documents the story of human culture from its beginnings to the present. The British museum was the first public national museum in the world.

-Tanisq Bararia, Class -7, Bangluru

We had invited BKD Club members to draw picture of a historical monument and write its brief introduction as well. Four selected entries are published here. We appreciate the creativity shown by the children.

The Horse and the Horns
Illustrations: M.Mohandas
Once upon a time, God was desirous of knowing which animal loved Him best. When He came to the forest all the animals gathered around Him.
Hai ! probably God has come here to bless us with boons !
That's correct.
Email : doncomics@gmail.com
I will try a trick to test them.
I am preparing for a war. Somebody among you must come to help me.
No, no .. I can't fight a war.
I will go away fast.
Hearing God's words, animals went away, one by one.
At last, only the horse remained.
I think that only this horse loves me.
Tell me... what boon do you want?
Kindly bless me with two horns.

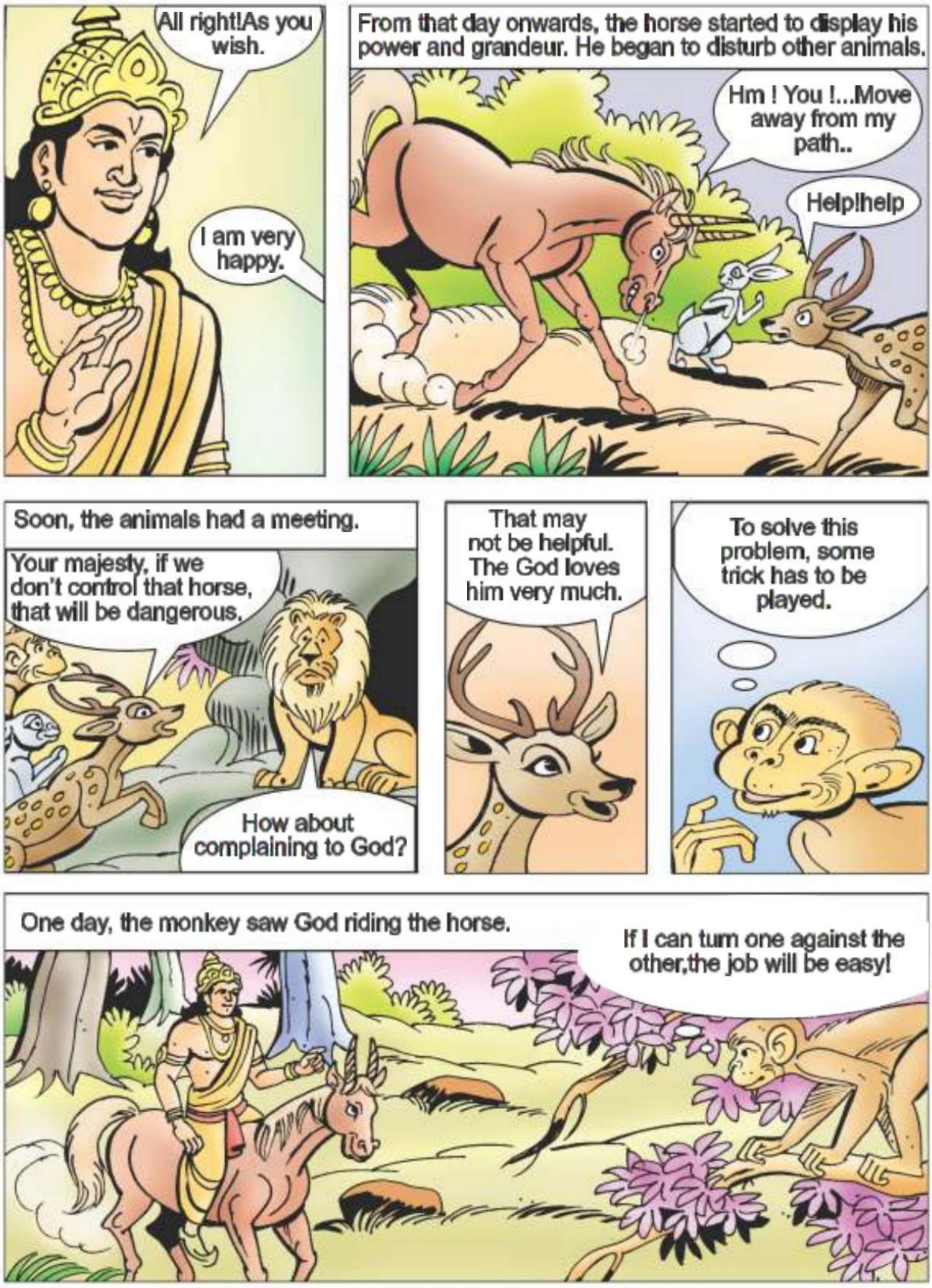
All right!As you wish.
I am very happy.
From that day onwards, the horse started to display his power and grandeur. He began to disturb other animals.
Hm ! You !...Move away from my path..
Help!help
Soon, the animals had a meeting.
Your majesty, if we don't control that horse, that will be dangerous.
How about complaining to God?
That may not be helpful. The God loves him very much.
To solve this problem, some trick has to be played.
One day, the monkey saw God riding the horse.
If I can turn one against the other,the job will be easy!

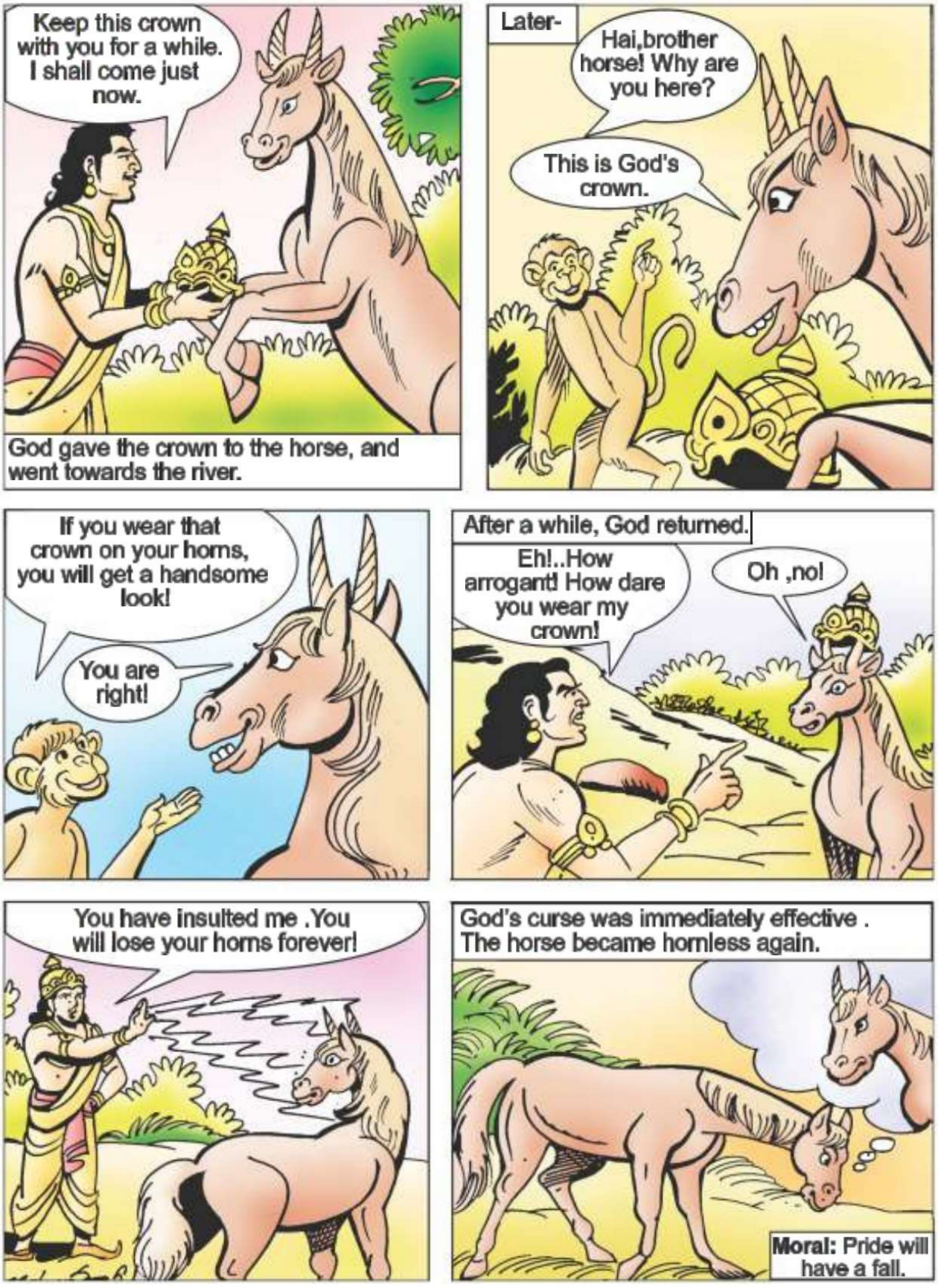
Keep this crown with you for a while. I shall come just now.
God gave the crown to the horse, and went towards the river.
Later-
Hai,brother horse! Why are you here?
This is God's crown.
If you wear that crown on your horns, you will get a handsome look!
You are right!
After a while, God returned.
Eh!..How arrogant! How dare you wear my crown!
Oh ,no!
You have insulted me .You will lose your horns forever!
God's curse was immediately effective . The horse became hornless again.
Moral: Pride will have a fall.

किड्स कॉर्नर

- Venu Variath

Draw crescents

Trace over the dots and complete the crescents.

Find the Name

Write the first letter of the name of each picture and find the name of a fruit.

Right or Wrong

A van moves on roads.

Right Wrong

Snake is a reptile.

Right Wrong

Bee is a fruit.

Right Wrong

Cow is a domestic animal.

Right Wrong

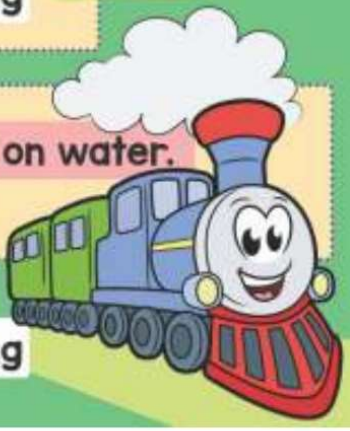

Train is designed to float on water.

Right Wrong

बालोदय एजुटूर

सम्पर्क सूत्र : 9928508098

अणुविभा का एक रचनात्मक प्रकल्प है 'बालोदय एजुटूर'। देश के किसी भी भाग से बच्चों का समूह इस कार्यक्रम में भाग ले सकता है। बालोदय एजुटूर के अन्तर्गत बच्चे चिल्ड्रन'स पीस पैलेस के प्राकृतिक एवं आनंददायक माहौल में विभिन्न बालोदय प्रवृत्तियों में शामिल होते हैं और साथ ही राजसमंद के निकट उदयपुर, कुंभलगढ़, हल्दीघाटी जैसे ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के भ्रमण का आनंद लेते हैं।

29 से 31 मई तीन दिवसीय बालोदय एजुटूर के लिए मुंबई से 74 बच्चों का दल राजसमंद आया। बच्चों ने इसे यादगार और प्रेरणादायक अनुभव बताया। यह टूर अणुव्रत समिति, मुंबई के द्वारा आयोजित था जिसमें समिति के 15 कार्यकर्ता भी शामिल थे। प्रस्तुत है इस एजुटूर की कुछ झलकियां -

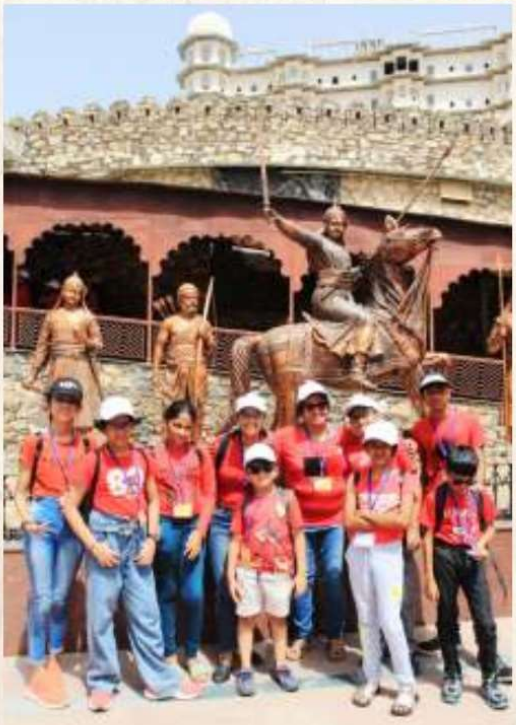

जुलाई, 2022

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

बाल गंगाधर तिलक

जन्म : 23 जुलाई, 1856 ■ निधन : 01 अगस्त, 1920

मूल नाम केशव गंगाधर तिलक एक भारतीय राष्ट्रवादी, शिक्षक, समाज सुधारक, वकील और एक प्रखर स्वतन्त्रता सेनानी थे। ये भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के पहले लोकप्रिय नेता हुए। उन्हें, लोकमान्य का आदरणीय सम्बोधन भी प्राप्त हुआ, जिसका अर्थ हैं लोगों द्वारा उनको नायक के रूप में स्वीकृत। लोकमान्य तिलक ब्रिटिश राज के दौरान स्वराज के सबसे पहले और मजबूत अधिवक्ताओं में से एक थे। उनका मराठी भाषा में दिया गया नारा ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'' और मैं उसे लेकर ही रहूँगा बहुत प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के कई प्रमुख नेताओं से करीबी सम्बन्ध बनाए।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक